ऋग्वेद ओ३म् यजुर्वेद

पवमान

(मासिक)

वर्ष : 34 श्रावण-भाद्रपद वि0स0 2079 अंक : 8 अगस्त 2022

मुद्रक: सरस्वती प्रेस, देहरादून वजन: 50 ग्राम

वैदिक साधन आश्रम तपोवन, नालापानी, देहरादून-248008

सामवेद अथर्ववेद

पवमान पत्रिका हमारी वेबसाइट www.vaidicsadhanashramdehradun.com पर भी उपलब्ध है।

karix
connect • interact

Transforming the way businesses communicate & interact with their customers

Karix empowers organisations to enable smarter, relevant, and personalised conversations with their customers and create seamless customer experiences, across the globe. Purpose-built for enterprises, Karix offers a rich suite of communication channels with superior security standards, unmatched customer support and a reliable cloud-based platform to support all communication needs.

21+
years of industry experience with a stronghold in all major industries

2,000+
Enterprise customers

100+ BN
Omni-channel messages processed annually

24x7
Support provided by over 200 engineers

10,000+
Business processes supported

CUSTOMER ENGAGEMENT SOLUTIONS SUITE

- WhatsApp
- A2P Messaging
- Email
- RCS
- Voice
- Marketing Automation
- Campaign Automation
- Chatbots
- Live Agent Chat

WHY DO FORTUNE 1000 BUSINESSES PREFER KARIX?

- Best in class connectivity
- High available systems
- Hybrid cloud infrastructure
- Deep domain understanding

For more details, visit us at www.karix.com or write to us at marketing@karix.com

ओ३म्

पवमान

वर्ष–34 अंक–8

श्रावण–भाद्रपद 2079 विक्रमी अगस्त 2022

सृष्टि संवत् 1,96,08,53,123 दयानन्दाब्द : 198

★

–: संरक्षक :–

स्वामी चित्तेश्वरानन्द सरस्वती

मो. : 9410102568

★

–: अध्यक्ष :–

श्री विजय कुमार

मो. : 9837444469

★

–: सचिव :–

प्रेम प्रकाश शर्मा

मो. : 9412051586

★

–: आद्य सम्पादक :–

स्व0 श्री देवदत्त बाली

★

–: मुख्य सम्पादक :–

डॉ० कृष्ण कान्त वैदिक शास्त्री

अवैतनिक

मो. : 9336225967

★

–: सहायक सम्पादक :–

अवैतनिक

मनमोहन कुमार आर्य–

मो. : 9412985121

★

–: कार्यालय :–

वैदिक साधन आश्रम, तपोवन,

तपोवन मार्ग, देहरादून–248008

दूरभाष : 0135–2787001

मोबाईल : 7895978734 (श्री चन्दन सिंह)

Email : vaidicsadanashram88@gmail.com

Web-www.vaidicsadhanashramdehradun.com

विषयानुक्रम

सम्पादकीय	डॉ. कृष्णकान्त वैदिक शास्त्री	2
वेदामृत	आचार्य डॉ. रामनाथ वेदालंकार	3
स्वतन्त्रता संग्राम में आर्यसमाज का योगदान	डॉ. कृष्णकान्त वैदिक शास्त्री	4
स्वराज्य व स्वतन्त्रता के प्रथम मन्त्र...	मनमोहन कुमार आर्य	8
आर्य समाज के आज के गौरवः स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती		12
सत्य–असत्य का निर्णय करने का वैदिक...	स्वामी विवेकानन्द परिव्राजक	14
सृष्टि की उत्पत्ति और इतर सभी अपौरुयोय...	मनमोहन कुमार आर्य	19
कर्म सिद्धांत	डॉ. महेश कुमार शर्मा	21
मूत्र–प्रणाली के रोग	डॉ. भगवान दास	26
भ्रामक ही नहीं घातक भी हो सकती है किसी...	सीताराम गुप्ता	29

वैदिक साधन आश्रम तपोवन, देहरादून के बैंक खातों का विवरण

दान हेतु बैंक खाते का नाम	बैंक का नाम व पता	बैंक अकाउन्ट नं.	IFSC Code
आश्रम को दान देने के लिये			
1. ''वैदिक साधन आश्रम''	केनरा बैंक, क्लाक टावर ब्रांच देहरादून	2162101001530	CNRB0002162
पवमान पत्रिका शुल्क			
2. ''पवमान''	केनरा बैंक, क्लाक टावर ब्रांच देहरादून	2162101021169	CNRB0002162
तपोवन विद्यानिकेतन स्कूल के लिये			
3. 'तपोवन विद्या निकेतन''	यूनियन बैंक, तपोवन रोड, नालापानी, देहरादून	602402010003171	UBIN0560243

पवमान पत्रिका में विज्ञापन के रेट्स

1. कलर्ड फुल पेज रु. 5000/– प्रति माह
2. ब्लैक एण्ड व्हाईट फुल पेज रु. 2000/– प्रति माह
3. ब्लैक एण्ड व्हाईट हॉफ पेज रु. 1000/– प्रति माह

सदस्यों के लिए पवमान पत्रिका के रेट्स

1. वार्षिक मूल्य रु. 200/– वार्षिक
2. 15 वर्ष (आजीवन) के लिए मूल्य रु. 2000/–

नोटः पवमान पत्रिका फुटकर विक्रय के लिए उपलब्ध नहीं है।

पवमान में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार सम्बन्धित लेखक के हैं। सम्पादक अथवा प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है। किसी भी विवाद के प्रतिवाद हेतु न्यायक्षेत्र देहरादून ही होगा। आपत्ति की अवधि प्रकाशन तिथि से एक माह के भीतर ही मानी जायेगी।

सम्पादकीय

महर्षि दयानन्द सरस्वती

स्वतन्त्रता, स्वराष्ट्र व स्वभाषा के प्रबल पक्षधर महर्षि दयानन्द सरस्वती का सम्पूर्ण जीवन व कृतित्व आध्यत्मिकता और राष्ट्रीयता से परिपूर्ण था। राष्ट्रप्रेम उनके लिए सर्वोपरि था। उनका विचार था कि पराधीन व्यक्ति समाज और राष्ट्र के लिए अधोगति का कारण बनता है। सन् 1874 में ऋषि ने 'आर्याभिविनय' नामक एक ग्रन्थ की रचना की जिसमें लिखा गया था, "अन्य देशवासी राजा हमारे देश में कभी शासन न करे। हम कभी अधीन न हों।" इससे प्रमाणित होता है कि महर्षि दयानन्द भारतीय स्वातंत्र्य की कल्पना करने वाले पहले व्यक्ति थे। उनसे प्रभावित होकर अनेक युवा स्वातन्त्र्य संग्राम में कूद पड़े थे और इनमें से कई ने इस संग्राम में अपने प्राणों की आहुति दी थी। इन शहीदों में स्वामी श्रद्धानन्द, लाला लाजपतराय, चन्द्रशेखर 'आजाद', भगत सिहं, राम प्रसाद बिस्मिल, श्यामकृष्ण वर्मा, वीर सावरकर, आदि प्रमुख थे।

ब्रिटिश पार्लियामेण्ट ने एक कानून(गवर्नमैंट आफ इन्डिया एक्ट,1858) पास करके भारत के शासन-तन्त्र को ईस्ट इन्डिया कम्पनी से लेकर सीधा अपने अधीन कर लिया था। 1 नवम्बर 1858 को तत्कालीन वायसराय और गवरनर जनरल लार्ड केनिंग ने दरबार में महारानी का एक घोषणापत्र पढ़कर सुनाया जिसमें कहा गया था-''हमारी प्रबल इच्छा है कि अब हम भारत में शान्तिपूर्ण उद्योगों को प्रोत्साहन दें, जनोपयोगी और उन्नति के कार्यो को आगे बढ़ायें और अपनी प्रजा के हित की दृष्टि से कार्य करें। उनकी समृद्धि ही हमारी शक्ति होगी, उनकी संन्तुष्टि ही हमारी सुरक्षा होगी और उनकी कृतज्ञता ही हमारा पुरुस्कार होगा। महर्षि दयानन्द ने अपने कालजयी ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश में कहा कि विदेशियों का राज्य चाहे वह माता-पिता के समान न्याय और दया से युक्त क्यों न हो, कभी हितकारी नहीं हो सकता है। सन 1874 में लिखे गये ग्रन्थ आर्याभिविनय में अपनी भावनायें महर्षि ने इस प्रकार प्रकट की थीं- "अन्यदेशवासी राजा हमारे देश में कभी न हों तथा हम लोग पराधीन कभी न हों।" उस समय तक स्वराज्य का विचार किसी भी राजनेता या विद्वान् के दिमाग में नहीं आया था। कांग्रेस के भीष्म पितामह दादाभाई नौरोजी ने सर्वप्रथम 1906 में "स्वराज्य" शब्द का उच्चारण किया था और होमरूल आन्दोलन के दिनों में इस शब्द का खुलकर प्रयोग होने लगा था। कांग्रेस के 1916 में लखनऊ में हुए अधिवेशन में लोकमान्य तिलक ने "स्वराज्य के जन्मसिद्ध अधिकार" की घोषणा की और 1928 के लाहौर अधिवेशन में कांग्रेस ने पूर्ण स्वराज्य प्राप्त करने के लक्ष्य की घोषणा की थी परन्तु महर्षि दयानन्द ने इससे कई वर्ष पूर्व ही स्वराज्य के विचार को न केवल प्रचारित किया अपितु अपने अनुयायियों 'में राष्ट्रप्रेम की भावनायें भर दीं जिसके फलस्वरूप देश के अनेक नौजवान स्वतन्त्रता संग्राम में कूद पड़े। समस्त स्वतन्त्रता सेनानियों के अथक प्रयास से भारत को 15 अगसत 1947 को स्वतन्त्रता प्राप्त हुई। इस स्वतन्त्रता संग्राम में भाग लेने वालों में अधिकांश महर्षि के अनुयायी या उनके विचारों से प्रेरित लोग थे। हम इस वर्ष स्वतंत्रता का अमृतोत्सव मना रहे हैं, जिसे पचहत्तर वर्ष पूर्ण करते हुए स्वतंत्रता दिवस पर सम्पन्न करेंगे। ऐसे पुनीत अवसर पर हम देश के समस्त शहीदों को नमन करते हुए यह स्वतंत्रता का **अमृतोत्सव विशेषांक** सुधी पाठकों को समर्पित कर रहे हैं।

डॉ० कृष्ण कान्त वैदिक शास्त्री

वेदामृत

'सोम प्रभु की महिमा'

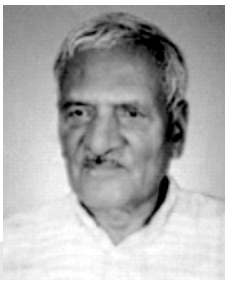

त्वं सोम क्रतुभिः सुक्रतुर्भूस्, त्वं दक्षैः सुदक्षो विश्ववेदाः।
त्वं वृषा वृषत्वेभिर्महित्वा, द्युम्नेभिर् द्युम्न्यभवो नृचक्षाः।। **ऋग्वेद 1.91.2**

ऋषिः गोतमः राहूगणः। देवता सोमः। छन्दः पंक्ति।।

(सोम) हे जगदुत्पादक तथा शुभगुणप्रेरक परमात्मन्! (त्वं) तू (क्रतुभिः) प्रज्ञाओं और कर्मों से (सुक्रतुः) सुप्रज्ञ और सुकर्मा (भूः) हुआ है। (विश्ववेदाः) सर्वव्यापक तथा सर्वज्ञ (त्वं) तू (दक्षैः) दक्षताओं एवं बलों से (सुदक्षः) सुदक्ष [हुआ है]। (त्वं) तू (वृषत्वेभिः) विद्या, सुख, धन आदि की वर्षाओं से [तथा] (महित्वा) महिमा से (वृषा) वर्षक तथा महान् [हुआ] है [और] (नृचक्षाः) मनुष्यद्रष्टा [तू] (द्युम्नेभिः) तेजो, यशों, अन्नों और धनों से (द्युम्नी) तेजस्वी, यशस्वी, अन्नवान् और धनी [हुआ है]।

हे सोम! हे जगत् के रचयिता तथा हृदय में शुभ गुणों की प्रेरणा करनेवाले परमात्मन्! मैं जब कभी तुम्हारे स्वरूप पर दृष्टिपात करता हूं, तब मुग्ध हो जाता हूं। तुम्हारे अन्दर जैसे अद्‌भुत गुण–कर्मों का सम्मिलन और सामन्जस्य है, उसे देख श्रद्धा से तुम्हारे प्रति मेरा मस्तक नत हो जाता है। तुम 'विश्ववेदाः' हो, विश्वव्यापक और विश्ववित् हो, विश्व के 'नृचक्षाः' हो, प्रत्येक मनुष्य के द्रष्टा हो। ज्यों ही मनुष्य अपने मन में अच्छा या बुरा कोई विचार लाता है अथवा अच्छा या बुरा काई कर्म करता है, त्यों ही तुम उसे जान लेते हो। तुम अपने क्रतुओं के कारण 'सुक्रतु' कहलाते हो। 'क्रतु' शब्द से सूचित होनेवाले ज्ञान और कर्म तुम्हारे अन्दर आदर्शरूप में विद्यमान हैं। तुम्हारे ज्ञान और कर्म दोनों ही सत्य, शिव और सुन्दर हैं। चारों वेद तुम्हारे अगाध और शुभ ज्ञान के साक्षी हैं और यह सकल ब्रह्माण्ड तुम्हारे व्यवस्थित शुभ कर्म का साक्षी हैं। तुम दक्षताओं एव बलों से 'सुदक्ष' हो। तुम्हारी दक्षता, तुम्हारा शिल्पकौशल, तुम्हारा कला–चातुर्य जगत् की एक–एक वस्तु में, तरु–वल्लरियों में, फूल–पत्तियों में, भूमि–आकाश में, चांद–सितारों में प्रत्यक्ष दृष्टिगोचर हो रहा है। तुम्हारे बल, तुम्हारे अपार सामर्थ्य का तब पता लगता है जब तुम प्राणियों को किसी ऐसी भयंकर विपत्ति से बचा लेते हो जिसके प्रतिकार के लिए वे स्वयं बेबस होते हैं, या किन्हीं दुर्जनों को उनके द्वारा किये जानेवाले सम्पूर्ण रक्षा–प्रयासों को विफल करके तुम काल का ग्रास बना देते हो।

हे सोम प्रभु! तुम अपने द्वारा हमारे ऊपर निरन्तर की जानेवाली वर्षाओं से 'वृषा' या वर्षक बने हुए हो। तुम हमारे ऊपर बल, विद्या, धन, सुख, विनय, सत्य, न्याय, दया, रक्षा आदि की सतत वृष्टि करते रहते हो, जिससे हम परिपुष्ट होते हैं। हे प्रभु! तुम 'द्युम्नों' से 'द्युम्नी' बने हुए हो। तेज, यश, धन, अन्न आदि प्रशस्त द्युम्न के तुम धनी हो, अतएव प्रशस्य और वन्दनीय हो।

आचार्य डॉ0 रामनाथ वेदालंकार
की पुस्तक वेद-मंजरी से साभार

स्वतन्त्रता संग्राम में आर्यसमाज का योगदान

-डॉ० कृष्णकान्त वैदिक शास्त्री

स्वतंत्रता संग्राम के आन्दोलन में आर्यसमाज का अप्रतिम योगदान रहा है। सशस्त्र क्रान्तिकारी आन्दोलन जिसे सामान्य रूप से क्रान्तिकारियों का योगदान कहा जाता है और स्वतंत्रता प्राप्ति के लिए होनेवाले अनेकों आन्दोलनों में आर्यसमाज का एक प्रखर राष्ट्रीय स्वरूप दिखाई देता है। अब हम प्रमुख क्रान्तिकारियों और उनके द्वारा किए गए कार्यों का वर्णन करेंगे। इस दृष्टि से देखें तो महर्षि दयानन्द सरस्वती के अमर शिष्य और क्रान्तिकारियों के पितामह श्री श्यामजी कृष्ण वर्मा का नाम हमारे सामने आता है। इनको महर्षि दयानन्द ने ही विदेश भेजा था। वहाँ जाकर उन्होंने इण्डिया हाऊस की स्थापना की, जो कि बाद में क्रन्तिकारियों का तीर्थस्थल बन गया था। इन्हीं के प्रेरणा पर विनायक दामोदर सावरकर विदेश गये और इनसे ही देशभक्ति की दिशा में निर्देशन प्राप्त करते थे। अण्डमान के कारावास काल में वे कैदियों को सत्यार्थप्रकाश पढ़ाया करते थे। इन्हीं सावरकर के शिष्य मदनलाल ढींगरा थे, जिन्होंने लन्दन में कर्जन वापली को नरक भेजकर भारतमाता के अपमान का बदला लिया था। वे स्वयं आर्यसमाजी परिवार से ही थे। इसी प्रकार 31 वर्ष तक विदेशों की खाक छानने वाले आजादी के परवाने राजा महेन्द्रप्रताप जी भी आर्यसमाज की ही देन थे। इन्हीं के साथ भारत को स्वतन्त्र कराने की धुन में अपने को विदेश में लापता हो जानेवाले हरिश्चन्द्र (स्वामी श्रद्धानन्द के पुत्र) आर्यसमाजी वातावरण से ही स्वाधीनता की घुट्टी पिये हुए थे। दिल्ली षड्यन्त्र में भाग लेने वालों में भाई बालमुकुन्द तथा महात्मा हंसराज के पुत्र बलराज दोनों ही आर्यसमाजी थे। प्रथम विश्व युद्ध के समय विदेशी सरकार का तख्ता पलटने के लिये गदर पार्टी ने एक योजना बनाई थी। दुर्भाग्यवश भेद खुल जाने से वह सफल नहीं हुई। तब

बगावत के अपराध में अनेकों को फांसी, कारावास आदि दण्ड दिये गये थे। इनमें पंजाब के मोहनलाल पाठक, राजस्थान के प्रतापसिंह बारहट, जगतराम हरयानवी आदि दृढ आर्यसमाजी ही थे। इनमें प्रतापसिंह बारहट के पिता केशर सिंह वारहट तो ऋषि दयानन्द से दीक्षा लेकर उनके शिष्य बने थे। इन्होंने राजस्थान में जीवन भर क्रान्ति का प्रबल नाद बजाया। इसी वीर ने कोटा के एक महन्त के यहाँ स्वामी श्रद्धानन्द के दामाद डॉ. गुरुदत्त तथा अन्य क्रान्तिकारियों के साथ डाका डालकर मिलने वाला धन देश की स्वाधीनता के कार्य में लगाने की योजना बनायी थी। इससे इनको काले पानी की सजा हुई थी। इसी प्रकार मैनपुरी षड्यन्त्र के मुखिया पं. गेन्दालाल जी दीक्षित तो स्वयं एक आर्यसमाजी थे। आप आर्यसमाजी शिक्षा संस्थाओं में अध्यापन कार्य करते रहे। देवतास्वरुप भाई परमानन्द तो उन आर्यसमाजी उपदेशकों में से थे जो कि महर्षि के सन्देश के प्रचारार्थ विदेशों में भी गये थे और देशभक्ति के अपराध में जिन्हें फांसी के बदले काले पानी की यातनाएं सहनी पड़ी। पंजाब केसरी लाला लाजपतराय ऋषि दयानन्द के उन अमर शिष्यों में से थे, जिनके शब्दों में आर्यसमाज

उनकी माता और ऋषि दयानन्द उनके पिता थे। इनकी देशभक्ति किसी से छिपी नहीं है।

काकोरी के हुतात्मा– रामप्रसाद बिस्मिल, रोशनसिंह तथा विष्णुशरण दुबलिश के रूप में महर्षि के अमर शिष्य आजादी के मोर्चे पर खड़े नजर आते हैं। बिस्मिल तो सत्यार्थप्रकाश से ही प्रेरणा प्राप्त करने वालों में से थे। इनको सशस्त्र क्रान्ति तथा देशभक्ति की दीक्षा देने वाले स्वामी सोमदेव जी आर्यसमाज के उपदेशक थे, जिन्होंने शाहजहाँपुर आर्यसमाज मन्दिर में इनको दीक्षा दी थी। बिस्मिल नित्य हवन करने वालों में से थे। ठाकुर रोशन सिंह अपने को आर्यसमाजी मानते थे। विष्णुशरण दुब्लिश आर्यसमाज के सदस्य रहे। फांसी के बाद राजेन्द्र लाहिड़ी की लाश का तो आर्यसमाजियों ने जुलूस निकाला था तथा सम्मानपूवक उसकी अन्त्येष्टि भी की थी।

भगतसिंह का दल– वीर भगतसिंह के दल में तो आर्यसमाज से प्रेरणा प्राप्त करनेवालों की संख्या और अधिक प्रकट होती है। भगतसिंह के दादा अर्जुनसिंह कट्टर आर्यसमाजी थे। वे नित्य हवन करते थे। आर्यसमाज के उपदेशक भी थे। भगतसिंह के पिता किसन सिंह भी आर्यसमाज की संस्था में पढ़ाते रहे। इनके चाचा अचिन्त्यराम जी आर्यसमाज के सदस्य थे। कमीशन के सामने गवाही देते हुए उन्होंने कहा था कि वे आर्यसमाजी विधि से सुखदेव की लाश की अन्त्येष्टि करना चाहते थे। इसी दल के सदस्य धन्वन्तरी, काशीराम तथा लेखराम प्रखर आर्यसमाजी थे।

1942 की क्रान्ति– देश की स्वाधीनता के हेतु लड़े जाने वाले इस संग्राम की लम्बी यात्रा में अन्तिम पड़ाव सन् 1942 की क्रान्ति के रूप में आता है। इसमें भी महर्षि के अनुयायियों ने पूर्ववत ही बढ़–चढ़कर भाग लिया था। डीएवी कालेज लाहौर में पुलिस ने छात्रों पर निर्ममता से गोलियाँ चलायी थीं। गुरुकुल डौरली (मेरठ) पर तालाबन्दी कर दी थी। आर्यसमाज नरेला में हवन कर रहे 70 आर्य समाजियों को पकड़कर जेल में डाल दिया था। नागपुर में श्री कालुराम नामक एक आर्यवीर को फांसी दी गयी थी। स्वामी स्वतन्त्रतानन्द जी को पंजाब के गवर्नर का वध करने के आरोप में नजरबन्द कर दिया था। स्वामी ईशानन्द, स्वामी धर्मानन्द तथा इनके पुत्र हरिदत्त को लालकिले के तहखाने में बन्द कर दिया था। इस आन्दोलन में भी आर्यसमाज किसी से पीछे नहीं रहा है।

आजाद हिन्द सेना– नेता जी सुभाष के द्वारा आजाद हिन्द सेना का निर्माण और उसका कार्य इस इतिहास में एक गौरवशाली स्वर्णिम अध्याय है। उक्त सेना के तीन प्रमुख नायकों में से सहगल आर्यसमाजी परिवार की ही देन थे। उनके पिता महाशय अछरुराम जी जाने माने आर्यसमाजी तथा कानूनविद थे, जिन्होंने जानबूझकर ही अपने बेटे को इस भट्टी में झोंका था। जब लालकिले में इस सेना पर अभियोग चला, तब इनके बचाव पक्ष के वकीलों की जो कमेटी बनी थी, बख्शी टेकचन्द्र तथा दीवान बदरीदास के रूप में आर्यसमाज ने योगदान करके अपनी राष्ट्रनिष्ठा को व्यक्त किया था। इसके अतिरिक्त सामान्य सैनिक के रूप में इस सेना में भर्ती होकर योगदान करने वाले आर्यसमाजियों की संख्या तो अनगिनत है। इस प्रकार हम देखते हैं कि सशस्त्र क्रान्तिकारी दल के माध्यम से भी आर्यसमाज देश की स्वाधीनता के लिए प्रयत्न करने वाले देशभक्तों की मुहिम में अग्रिम पंक्ति में खड़ा दिखायी देता है।

शिक्षण संस्थाओं के द्वारा जागरण– लार्ड मैकाले ने अंग्रेजी राज्य की जड़ें भारत में दृढ़ करने के लिए जिस अंग्रेजी शिक्षा का प्रचलन किया, सर्वप्रथम ऋषि दयानन्द और उनके परम शिष्य स्वामी श्रद्धानन्द ने गुरुकुल शिक्षा प्रणाली के द्वारा उसे छिन्न–भिन्न करने का स्तुत्य राष्ट्रीय कार्य किया था। इसका आरम्भ गुरुकुल कांगड़ी की स्थापना से होता है। ये संस्थाएं सर्वथा ही सरकारी प्रभाव से मुक्त थी। इनकी शिक्षा, पाठ्यक्रम, अध्यापक, उत्सवों के आयोजनादि सभी स्वतन्त्र थे। वहाँ इतिहास पढ़ाने का तरीका देशभक्ति के भावों को उद्दीप्त करने वाला होता था। वहाँ छात्र अंग्रेजी विरोधी बातें प्रत्यक्ष किया करते थे। प्रखर देशभक्त समय–समय पर ठहर कर विदेशी सरकार पर अनेक प्रहार किया करते थे। इसी कारण एक बार बिजनौर के कलेक्टर ने गुरुकुल में शस्त्रों के छिपे होने के सन्देह में छापा भी मारा था। प्रखर देशभक्त समय–समय पर विदेशी सरकार पर प्रहार किया करते थे। नगरों से दूर एकान्त जंगल में होने के कारण भी सरकार इनको एक लम्बे अरसे तक सन्देह की दृष्टि से देखती रही। यह हाल सभी गुरुकुलों का था। इसी प्रकार डीएवी कालेजों को हम देख सकते हैं। इन कालेजों ने स्वयं अपना सम्बन्ध विश्वविद्यालय के साथ करने में अपमान समझा था। कानपुर का डीएवी कालेज तो देशभक्त क्रान्तिकारियों का अड्डा था। शालिगराम शुक्ल इसके छात्रावास में ही पुलिस के साथ गोलियों से मुठभेड़ करते हुए शहीद हुए थे। लगभग यही हाल उस समय के सारे डीएवी कालेजों का था।

कुछ अन्य संकेत– इतिहास में मिलने वाले निम्न संकेतों से भी हम आर्यसमाज की स्वाधीनता के प्रति आस्था समझ सकते हैं। अंग्रेजी काल में सैनिकों को आर्यसमाज में. जाने से रोका जाता था। उनके यज्ञोपवीत उतरवाये जाते थे। रोहतक में आर्यसमाज मन्दिर जब्त करने की घोषणा भी कर दी गयी थी। आर्यसमाजी उपेदशक दौलतराम को सैनिकों में धर्मप्रचार करने पर मुकद्दमा चलाकर दण्ड दिया गया था। करनाल के जिलाधीश ने नगर के धनी जनों को अपने यहाँ आर्यसमाजियों को ठहराने का निषेध किया था।

लाहौर के जिलाधीश ने स्वामी श्रद्धानन्द जी से कहा था कि आर्यसमाज पोलिटिकल संस्था है। 1910 में वेलेण्टाइन शिरोल ने इण्डियन अरनेस्ट पुस्तक में आर्यसमाज का अंग्रेज विरोधी वर्णन किया था। लाहौर के सिविल मिलिटरी गजट पत्र में भी आर्यसमाज को अंग्रेजो का राज्य उखाड़कर हिन्दू राज्य की स्थापना करने वाला कहा गया था। इसके अतिरिक्त देशभक्त महापुरुषों में से अधिकांश ने आर्यसमाज और महर्षि दयानन्द को देशभक्ति एवं स्वाधीनता के पुजारी के रूप में ही स्वीकार किया है। देश की स्वतन्त्रता में आर्य समाजियों की भूमिका अग्रणी रही है। स्वतंत्रता आंदोलन में आर्य वीरों ने अपने प्राणों की आहुति दी। महर्षि दयानन्द जी ने अपने ग्रन्थ आर्याभिविनयः में लिखा है– "अन्य देशवासी राजा हमारे देश में न हों, हम लोग पराधीन कभी न रहे"। इससे पता लगता है कि महर्षि दयानन्द सरस्वती की क्या भावना थी। कांग्रेस के भीष्म पितामह दाभाई नौरोजी ने सर्वप्रथम 1906 में ''स्वराज्य'' शब्द का उच्चारण किया था और होमरूल आन्दोलन के दिनों में इस शब्द का खुलकर प्रयोग होने लगा था। कांग्रेस के

1916 में लखनऊ में हुए अधिवेशन में लोकमान्य तिलक ने ''स्वराज्य के जन्मसिद्ध अधिकार'' की घोषणा की और 1928 के लाहौर अधिवेशन में कांग्रेस ने पूर्ण स्वराज्य प्राप्त करने के लक्ष्य की घोषणा की थी परन्तु महर्षि दयानन्द ने इससे कई वर्ष पूर्व ही स्वराज्य के विचार को न केवल प्रचारित किया अपितु अपने अनुयायियों 'में राष्ट्रप्रेम की भावनायें भर दीं जिसके फलस्वरूप देश के अनेक नौजवान स्वतन्त्रता संग्राम में कूद पड़े थे। सन 1919 में भारत के स्वाधीनता संग्राम के इतिहास का नया अध्याय आरम्भ हुआ। ब्रिटिश राजनीतिज्ञों द्वारा प्रथम विश्वयुद्ध के अवसर पर लोकतंत्र, राष्ट्रीयता और स्व–भाग्य निर्णय का समर्थन करने वाले सिद्धान्तों की घोषणाएं कीं गईं थीं। उनके द्धारा भारतीय जनता को आश्वासन दिया गया था कि युद्ध के समाप्त होते ही वे भारत में उत्तरदायी शासन दिए जाने के सम्बन्ध में कोई महत्वपूर्ण निर्णय लेंगे परन्तु सन 1919 में गवर्नमैंट ऑफ इन्डिया एक्ट द्वारा जिन शासन–सुधारों की घोषणा की गई उनसे जनता सुंतुष्ट नहीं हुई। रॉलेट एक्ट के दमनकारी कानून का विरोध करने हेतु स्वामी श्रद्धानन्द ने तार द्वारा अपना सहयोग देने की सहमति प्रदान की थी। दिल्ली सत्याग्रह के संचालन के लिए एक कमेटी गठित की गई। इसके एक तिहाई से अधिक सदस्य आर्य सभासद थे। दिसम्बर सन 1919 में कांग्रेस का वार्षिक अधिवेशन अमृतसर में हुआ जिसकी स्वागतकारिणी समिति के अध्यक्ष स्वामी श्रद्धानन्द चुने गए थे। अपने अध्यक्षीय भाषण में उन्होंने अछूतोद्धार पर बहुत जोर दिया। उनका कहना था कि देश की स्वतन्त्रता के लिए उन बुराइयों को दूर करना आवश्यक है जिनके कारण देश गुलाम बना था। उन्होंने अस्पृश्यता निवारण को कांग्रेस के कार्यक्रम में सम्मिलित कराया। उनका हिन्दी में भाषण देना भी एक क्रांतिकारी कदम था। सितम्बर 1920 में कांग्रेस का विशेष अधिवेशन कलकत्ता में हुआ जिसमें गांधी जी ने असहयोग आन्दोलन का प्रस्ताव रखा। इस आन्दोलन ने व्यापक रुप धारण किया। आन्दोलन चलाने के लिए धन की आवश्यकता थी। महात्मा गांधी ने इसके लिए तिलक फण्ड बनाकर धनराषि एकत्र करने की अपील की थी। गुरुकुल कांगड़ी के विद्यार्थी तिलक स्वराज्य फण्ड एकत्र करने के लिए निकल पड़े। स्वामी श्रद्धानन्द ने भी इस असहयोग आन्दोलन में उत्साहपूर्वक भाग लिया। महात्मा गांधी के इस असहयोग आन्दोलन को श्रद्धानन्द और अन्य आर्य नेता महर्षि दयानन्द द्वारा प्रदर्शित मार्ग के अनुरुप ही मानते थे इसलिए वे बड़ी संख्या में सम्मिलित हुए और उन्होंने अपनी पूर्ण शक्ति लगा दी। भारत को अन्ततोगत्वा 15 अगस्त 1947 को स्वतन्त्रता प्राप्त हुई। भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम में महर्षि दयाननद के लाखों अनुयायियों ने तन, मन, धन और अपना जीवन तक निछावर कर दिया इनमें लाला लाजपतराय, एम.जी.रानाडे, स्वामी श्रद्धानन्द, भाई परमानन्द, श्यामजी कृष्ण वर्मा, इन्द्र वाचस्पति, भगवतीचरण, भगतसिंह, रामप्रसाद बिस्मल, रोशन सिंह गेंदालाल दीक्षित, मदनलाल धींगड़ा, भाई बालमुकुन्द, मुरलीधर, देशबन्धु गुप्ता आदि प्रमुख हैं। इन समस्त स्वतन्त्रता सेनानियों के बलिदान के लिए राष्ट्र सदा ऋणी रहेगा।

सौ हाथों से कमा, हजार हाथों से दान दे।

स्वराज्य व स्वतन्त्रता के प्रथम मन्त्र–दाता महर्षि दयानन्द

–मनमोहन कुमार आर्य

महाभारत काल के बाद देश में अज्ञानता के कारण अन्धविश्वास व कुरीतियां उत्पन्न होने से देश निर्बल हुआ जिस कारण समय समय पर उसके कुछ भाग पराधीन होते रहे। पराधीनता का शिंकजा दिन प्रतिदिन अपनी जकड़ बढ़ाता गया। देश अशिक्षा, अज्ञान, अन्धविश्वास, पाखण्ड व सामाजिक विषमताओं से ग्रस्त होने के कारण पराधीनता का प्रतिकार करने में असमर्थ था। सौभाग्य से सन् 1825 में गुजरात में महर्षि दयानन्द का जन्म हुआ। लगभग 22 वर्ष तक अपने माता–पिता की छत्र–छाया में उन्होंने संस्कृत भाषा व शास्त्रीय विषयों का ज्ञान प्राप्त किया। इससे उनकी तृप्ति नहीं हुई। ईश्वर के सच्चे स्वरूप का ज्ञान और मृत्यु पर विजय कैसे प्राप्त की जा सकती है, इसके उपाय ढूंढने के लिये वह घर से निकल गये और लगभग 13 वर्षों तक धार्मिक विद्वानों व योगियों आदि की संगति तथा धर्म ग्रन्थों का अनुसंधान करते रहे। इसी बीच सन् 1857 ईस्वी का प्रथम स्वतन्त्रता संग्राम भी हुआ जिसे अंग्रेजों ने कुचल दिया। इसमें महर्षि दयानन्द की सक्रिय भूमिका होने का अनुमान है परन्तु इससे सम्बन्धित जानकारियां उन्होंने विदेशी राज्य होने के कारण न तो बताई और न ही उनका किसी ने अनुसंधान किया। इसके बाद सन् 1860 में मथुरा में दण्डी गुरू स्वामी विरजानन्द के वह अन्तेवासी शिष्य बने और उनसे आर्ष संस्कृत व्याकरण और वेदादि शास्त्रों का अध्ययन किया। गुरु व शिष्य धार्मिक अन्धविश्वासों, देश के स्वर्णिम इतिहास व पराधीनता आदि विषयों पर परस्पर चर्चा किया करते थे। अध्ययन पूरा करने पर गुरु ने स्वामी दयानन्द को देश से अज्ञान, अन्धविश्वास, सामाजिक असमानता व विषमता दूर करने का आग्रह किया। गुरु विरजानन्द ने सभी समस्याओं वा बुराईयों की जड़ अविद्या अर्थात् विपरीत ज्ञान को दूर करने के लिए ईश्वरीय ज्ञान वेद का प्रचार करने का मन्त्र भी स्वामी दयानन्द जी को दिया था। स्वामी दयानन्द जी ने गुरु को इस कार्य को प्राणपण से करने का वचन दिया और सन् 1863 में इस कार्य को आरम्भ कर दिया।

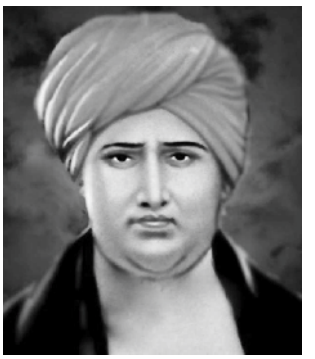

स्वामी दयानन्द जी सन् 1874 में काशी में वेदोक्त धर्म का प्रचार, समाज सुधार के कार्य व अन्धविश्वासों का खण्डन कर रहे थे। उनके एक भक्त राजा जयकृष्ण दास ने उन्हें अपने समस्त विचारों, वैदिक मान्यताओं व सिद्धान्तों का एक ग्रन्थ लिखने का आग्रह किया। अल्प काल में ही महर्षि दयानन्द ने यह ग्रन्थ लिख कर पूरा कर दिया जिसको 'सत्यार्थ प्रकाश' नाम दिया गया। लेखक ने इस ग्रन्थ का पुनः एक नया संशोधित संस्करण तैयार किया जो अक्तूबर, सन् 1883 में पूर्ण हो कर छपना आरम्भ हो गया था और सन्

1884 में प्रकाशित हुआ। इससे पूर्व यह जानना आवश्यक है कि महर्षि दयानन्द वेद एवं समस्त वैदिक वांग्मय के पारदर्शी व अपूर्व विद्वान थे। उन्होंने अपने दिव्य ज्ञान चक्षुओं से जान लिया था कि ईश्वर, जीव व प्रकृति के समस्त सत्य रहस्य वेद और वैदिक साहित्य में निहित हैं। अन्य जितने भी मत–मतान्तर उनके समय में प्रचलित थे वह सभी अज्ञान व असत्य मान्यताओं से युक्त थे व आज भी हैं। सभी मतों के धर्म ग्रन्थों में असत्य व अन्धविश्वासयुक्त मान्यताओं की भरमार थी जिसका दिग्दर्शन उन्होंने सत्यार्थ प्रकाश में किया है। देश की पराधीनता और इस कारण देश व देशवासियों के शोषण व उनसे होने वाले अन्याय एवं अत्याचारों से भी वह परिचित थे। वह जान गये थे कि पराधीनता का मुख्य कारण एक सत्य वेदोक्त मत का पराभव व नाना वेद विरुद्ध मतों का आविर्भाव, उनका प्रचलन व सामाजिक विषमता आदि थे। अतः सत्यार्थ प्रकाश के आठवें समुल्लास में सृष्टि की उत्पत्ति, स्थिति व प्रलय पर विचार करते हुए उन्होंने पराधीनता पर अपना ध्यान केन्द्रित कर व अपनी जान जोखिम में डालकर देश की स्वतन्त्रता का मूल मन्त्र देशवासियों को दिया। इस घटना के प्रकाश के कुछ समय बाद ही एक षडयन्त्र के अन्तर्गत उनका विषपान कराये जाने व समय पर समुचित चिकित्सा न होने के कारण देहावसान हो गया।

सन् 1883 में जिन दिनों महर्षि दयानन्द ने देश की आजादी विषयक पंक्तियां अपने ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश में लिखी जिसकी चर्चा हम आगे करेंगे, उस समय देश में सजग धार्मिक संस्था के रूप में हम ब्रह्म समाज को पाते हैं जिसके संस्थापक राजा राममोहन राय जी थे। यह मत व सम्प्रदाय तथा इसके संस्थापक अंग्रेजों के राज्य को भारत पर वरदान के रूप में देखते थे। अतः इस संस्था व इसके आचार्यों से आजादी विषयक विचार मिलने की सम्भावना नहीं थी। हमारे सनातन धर्म के विद्वानों की क्या स्थिति थी, इसका वर्णन वीर सावरकर जी ने किया है जिसे आर्य जगत प्रख्यात विद्वान प्रो. राजेन्द्र जिज्ञासु जी के शब्दों में प्रस्तुत करते हैं। जिज्ञासु जी अपनी पुस्तक 'इतिहास प्रदूषण' में लिखते हैं कि वीर सावरकर जी ने अपनी आत्मकथा में ऋषि दयानन्द तथा आर्य समाज से प्राप्त ऊर्जा व प्रेरणा की खुलकर चर्चा की है। यदि ये बन्धु (श्री आर्यमुनि, मेरठ और उनका वेदपथ पत्रिका में प्रकाशित एक लेख) लार्ड रिपन के सेवा निवृत्त होने पर काशी के ब्राह्मणों द्वारा उनकी शोभा यात्रा में बैलों का जुआ उतार कर उसे अपने कन्धों पर धर कर उनकी गाड़ी को खींचने वाला प्रेरक प्रसंग उद्धृत कर देते तो पाठकों को पता चल जाता कि इस विश्व प्रसिद्ध क्रान्तिकारी सावरकार जी को देश के लिए जीने मरने के संस्कार व विचार देने वालों में ऋषि दयानन्द अग्रणी रहे। अतः सनातन धर्म के विद्वानों से भी अंग्रेजों के भारत से वापिस जाने और देश को स्वतन्त्र करने की मांग की आशा नहीं की जा सकती थी। यह महर्षि दयानन्द ही थे जिन्होंने अपने गुरू विरजानन्द प्रदत्त वैदिक संस्कारों के आधार पर परतन्त्रता का विरोध किया और सत्यार्थ प्रकाश में लिखा कि ''कोई कितना ही करे परन्तु जो स्वदेशीय राज्य होता है वह सर्वोपरि उत्तम होता है। अथवा मत–मतान्तर के आग्रहरहित, अपने और पराये का पक्षपातशून्य, प्रजा पर पिता माता के समान कृपा, न्याय और दया के साथ विदेशियों का राज्य भी पूर्ण सुखदायक नहीं है। परन्तु भिन्न–भिन्न भाषा, पृथक्–पृथक् शिक्षा, अलग व्यवहार का विरोध छूटना अति दुष्कर है। बिना इसके छूटे परस्पर का पूरा उपकार और अभिप्राय (देश में स्वराज्य, अज्ञान व अन्धविश्वास रहित वैदिक धर्म का पालन) सिद्ध होना कठिन है।" इससे पूर्व महर्षि

दयानन्द ने भारत में विदेशी शासन का कारण बताते हुए लिखा है कि ''अब अभाग्योदय से, और आर्यों के आलस्य–प्रमाद, परस्पर के विरोध से अन्य देशों के राज्य करने की तो कथा ही क्या कहनी, किन्तु आर्यावर्त में आर्यों का अखण्ड, स्वतन्त्र, स्वाधीन, निर्भय राज्य इस समय नहीं है। जो कुछ है, सो भी विदेशियों के पादाक्रान्त हो रहा है। कुछ थोड़े राजा स्वतन्त्र है। दुर्दिन जब आता है, तब देशवासियों को अनेक प्रकार का दुःख भोगना पड़ता है।"

महर्षि दयानन्द लिखित यह स्वर्णिम शब्द ही देश की आजादी के आधार वाक्य बने। इस समय तक देश में किसी राजनीतिक दल का कोई नेता नहीं था। कांग्रेस की स्थापना सन् 1885 में महर्षि दयानन्द के इन वाक्यों के लिखने के दो वर्ष बाद हुई। इससे पूर्व ऋषि दयानन्द जी सन् 1863 से देश के अनेक भागों में जाकर वेदप्रचार कर वह अविद्या दूर करने सहित देश को स्वतन्त्र कराने के लिए भी जागरण का कार्य कर रहे थे। हमें यह जानना चाहिये कि अविद्या दूर करने सहित समाज सुधार का कार्य स्वतन्त्रता प्राप्ति का पूरक होता है। वर्तमान समय में देश भर में स्वतन्त्रता दिवस की पिचहत्तरवीं जयन्ती व अमृत महोत्सव मनाया जा रहा है। देश की स्वराज्य वा स्वतन्त्रता की प्राप्ति के लिए सन् 1883 में सर्वप्रथम मन्त्र व विचार प्रस्तुत करने का श्रेय महर्षि दयानन्द को है। दुःख है कि सारा देश महर्षि दयानन्द के इस योगदान पर मौन है। 21 वीं शताब्दी में इससे बड़ा आश्चर्य क्या हो सकता है? स्वामी दयानन्द के स्वदेशीय राज्य को सर्वोत्तम बताने पर टिप्पणी करते हुए आर्यजगत के विख्यात विद्वान स्वामी विद्यानन्द सरस्वती ने अपनी टिप्पणी में लिखा है कि भारत में अंग्रेज व्यापारी बन कर आये। व्यापार के लिए उन्होंने ईस्ट इण्डिया कम्पनी की स्थापना की। धीरे–धीरे यही कम्पनी भारत में अंग्रेजी राज्य का आधार बन गई। उसकी अपनी सेना थी। इस सेना और भारतीय रियासतों के परस्पर संघर्ष के फलस्वरूप किसी भी एक पक्ष के सैनिक बल की सहायता से वह देश पर अधिकार करती गई। 1849 में पंजाब की विजय के साथ उसका यह अभियान पूरा हो गया और समूचे देश में यूनियन जैक फहराने लगा, परन्तु विज्ञान का नियम है–*To every action there is an equal and opposite reaction' अर्थात प्रत्येक क्रिया की उतनी ही जोरदार और विरोधी प्रतिक्रिया होती है। भारतीयों के भीतर विद्रोह की आग सुलगने लगी, और 10 मई 1857 को ज्वाला बनकर भड़क उठी और देश के कोने–कोने में फैल गई। परन्तु कुछ ही दिनों में यह आग ठण्डी पड़ गई और भारतीय लोग खून का घूंट पीकर रह गये। इस क्रिया की प्रतिक्रिया भी अवश्यंभावी थी। ब्रिटिश सरकार ने कूटनीति का सहारा लिया। महारानी विक्टोरिया ने एक घोषणापत्र (Proclamation) जारी किया। उसकी भाषा बड़ी लुभावनी थी, पर एक व्यक्ति (स्वामी दयानन्द सरस्वती) इस कूटनीतिक चाल को भांप गया। उसने अपने ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश में एक घोषणा की जिसे उपर्युक्त पंक्तियों में प्रस्तुत किया गया है।

सुराज्य भी स्वराज्य का विकल्प नहीं होता–'Good government is no substitute for self-government-' इसके उद्घोषक ऋषि दयानन्द ने अपनी प्रार्थना पुस्तक (Prayer book) 'आर्याभिविनय' के माध्यम से अपने अनुयायियों को आदेश दिया कि वे प्रतिदिन प्रार्थना किया करें कि ''अन्य देशवासी राजा हमारे देश में न हों तथा हम पराधीन कभी न रहें।" भारत के सन्दर्भ में कहा जा सकता है कि यह पूरी तरह वही घोषणा थी जिसके द्वारा 8 अगस्त 1929 को गांधी जी ने 'भारत छोड़ो'

और 31 दिसम्बर 1929 को लाहौर में उसके लिए संघर्ष करने की घोषणा की थी। इससे पूर्व 1906 में दादाभाई नौरोजी ने इसका उच्चारण किया था। किन्तु स्वामी दयानन्द ने सन् 1883 में जब स्वराज्य का विचार भी किसी के मस्तिष्क में भी नहीं उपजा था, पूर्ण स्वराज्य ही नहीं, चक्रवर्ती साम्राज्य की घोषणा की थी। अंग्रेज सन् 1947 में भारत छोड़ कर जा चुके हैं और हम विगत 75 वर्षों से स्वाधीन हैं। लोगों को इस बात का ज्ञान नहीं है कि एक बार एक अंग्रेज कलक्टर ने स्वामी दयानन्द जी का भाषण सुनने के बाद कहा था कि ''यदि आपके भाषण पर लोग चलने लग जाएं तो इसका परिणाम यह होगा कि हमें अपना बोरिया बिस्तर बांधना पड़ेगा।" स्वामी दयानन्द के ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश के वचनों तथा भावनाओं का गम्भीर अध्ययन करनेवाले 1911 की जनसंख्या के अध्यक्ष मिस्टर ब्लण्ट ने लिखा था–"Dayanand was not merely a religious reformer, he was also a great patriot. It would be fair to say that with him religious reform was a mere means to national reform. [Census Report of 1911, Vol- XV, Part I, Chap- IV, P-135, अर्थात् दयानन्द केवल धार्मिक सुधारक नहीं थे, वे एक महान् देशभक्त भी थे। यह कहना ठीक ही होगा कि उन्होंने धार्मिक सुधार को राष्ट्रीय सुधार के साधनरूप में ही अपनाया था।

महर्षि दयानन्द ही देश की आजादी के प्रथम मन्त्रदाता वा स्वराज्य और स्वतन्त्रता का विचार देने वाले महापुरूष थे। स्वामी दयानंद ने अपने ग्रन्थों व प्रवचनों में भी देशभक्ति के नाना विचार प्रस्तुत किये हैं। देश की स्वतन्त्रता में उनका व उनके अनुयायी आर्यसमाजियों का प्रमुख योगदान है। अतः आगामी सन् 2022 के स्वतन्त्रता दिवस के दिन महर्षि दयानन्द और आर्य समाज के योगदान की चर्चा करना आवश्यक है। यह बताना भी उचित होगा कि क्रान्तिकारियों के आद्य गुरू पं. श्यामजी कृष्ण वर्म्मा, श्री गोपाल कृष्ण गोखले के राजनीतिक गुरू थे। महादेव गोविन्द रानाडे, समाज सुधारक ऋषि दयानन्द जी के साक्षात् शिष्य थे। आजादी के अन्य प्रमुख नेता स्वामी श्रद्धानन्द, लाला लाजपतराय, भाई परमानन्द, पं. राम प्रसाद बिस्मिल आदि महर्षि दयानन्द की शिष्य मण्डली के ही व्यक्ति थे। देश की आजादी के आन्दोलन में देश के सभी आर्यसमाजियों ने किसी न किसी रूप में भाग लिया था जिस कारण देश आजाद हुआ। महर्षि दयानन्द ने देश की आजादी, धार्मिक व समाज सुधार के कार्यों में जो योगदान किया उसके लिये देशवासियों ने उनका सही मूल्यांकन कर उनके साथ न्याय नहीं किया। स्वतन्त्रता दिवसों पर भी हमें उनकी उपेक्षा स्पष्ट दिखाई देती रही है। यदि ऋषि दयानन्द के लिखे व कहे शब्द किसी अन्य व्यक्ति ने कहे होते व उनके व आर्यसमाज जैसा योगदान किसी अन्य संस्था ने किया होता तो आज उसकी देश भर में जयजयकार हो रही होती। देश व इसके नेताओं को सत्य का ग्रहण एवं असत्य का परित्याग करना चाहिये। अपनी अविद्या व पूर्वाग्रहों को दूर करना चाहिये। देश की स्वतन्त्रता की पिचहत्तरवीं वर्षगांठ व अमृत महोत्सव पर सभी को बधाई। हमें 14 अगस्त, 1947 के भारत के विभाजन दिवस को भी स्मरण करना चाहिये। आजादी की कीमत चुकानें वाले देश के क्रान्तिकारियों एवं विभाजन का शिकार हुए बूढ़े, बच्चे, युवा, माताओं एवं बहनों को स्मरण कर ही हम आजादी की असली कीमत जान सकते हैं व हमारी भावी पीढ़िया इसकी रक्षा करने में प्रवृत्त हो सकती हैं। ऋषि दयानन्द और आर्यसमाज के देश की आजादी में योगदान पर विद्वानों के ग्रन्थ एवं विद्वानों के लेख उपलब्ध हैं। सभी पाठकों को इनका अवलोकन करना चाहिये।

आर्य समाज के आज के गौरव

स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती

संन्यास से पहले : आचार्य हरिदेव

माता : श्रीमती समाकौर आर्य

पिता : श्री तोखराम आर्य

जन्मतिथि : 7 जुलाई 1947 ई०

जन्म स्थान : ग्रा० गौरीपुर, जि० भिवानी, राज्य : हरियाणा, भारत

वर्तमान पता : श्रीमद्दयानंद वेदार्ष महाविद्यालय न्यास, 119 गौतम नगर, नई दिल्ली– 110049

दूरभाष : 9868855155,

ई० मेलः arsh.jyoti@yahoo.in

विद्यागुरु : स्वामी ओमानंद सरस्वती

संन्यास गुरुः स्वामी चित्तेश्वरानंद सरस्वती

शिक्षा :

- सन् 1963 में गुरुकुल झज्जर से उपाध्याय प्रथम श्रेणी में संस्कृत व्याकरण, वेद, दर्शन व उपनिषद् तथा संस्कृत साहित्य।
- सन् 1964 में गुरुकुल झज्जर से विद्यावारिधि (शास्त्री समकक्ष) प्रथम श्रेणी में संस्कृत व्याकरण, वेद, दर्शन व संस्कृत साहित्य से।
- सन् 1965 में आर्ष विद्यापीठ झज्जर (केंद्र सरकार से मान्यता प्राप्त) व्याकरणाचार्य प्रथम श्रेणी में संस्कृत व्याकरण से।
- सन् 1977 में गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार से वेद विषय में प्रथम श्रेणी में एम०ए०।

अध्यापक पद से त्याग : सन् 1977 में संस्कृत व वैदिक भारतीय संस्कृति के प्रचार–प्रसार हेतु गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के वेद विभाग के प्राध्यापक पद से त्यागपत्र दिया।

संस्थापित संस्थाः वेद व संस्कृत भाषा के प्रचार–प्रसारार्थ भारतवर्ष के विभिन्न क्षेत्रों में निम्न संस्थाओं की स्थापना की है। वर्तमान में ये सभी संस्थाएं निरंतर प्रगतिशील होती हुई अनेक संस्कृत छात्रों का निर्माण व संस्कृत भाषा प्रचार–प्रसार में निरंतर संलग्न हैं। यहां लगभग 1000 छात्र निःशुल्क विद्याध्ययन करते हैं।

1 श्रीमद् दयानन्द वेदार्ष महाविद्यालय, ११६, गौतमनगर, नई दिल्ली–४६
आचार्य– स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती

2 गुरुकुल महाविद्यालय, यमुनातट, मंझावली, फरीदाबाद (हरियाणा)। आचार्य– आचार्य जयकुमार

3 श्रीमद् दयानन्द आर्षज्योतिर्मठ गुरुकुल, पौन्धा, देहरादून (उत्तराखण्ड)
आचार्य– डॉ0 धनंजय आर्य

4 गुरुकुल योगाश्रम, नरसिंह नाथ, जिला–बरगढ़ (उड़ीसा)
आचार्य– स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती (कार्यवाहक)

5 श्रीकृष्ण आर्ष गुरुकुल, देवालय, गोमत, जिला–अलीगढ़ (उत्तरप्रदेश)

आचार्य– स्वामी श्रद्धानन्द सरस्वती

6 आर्य कन्या गुरुकुल, देवनगर (घुचापाली) जिला बरगड़ (उड़ीसा)। आचार्य– आचार्या शारदा

7 पण्डित लेखराम आर्ष गुरुकुल महाविद्यालय, वेल्लीनेषि, पालक्काट (केरल)
आचार्य– अयन शास्त्री (कार्यवाहक)

8 श्रीमद्दयानन्द वेद विद्यालय गुरुकुल मलपेट, दयानन्द नगर, हैदराबाद

ताम्रपत्रों पर उत्कीर्ण कार्यः वेद व संस्कृत भाषा को अक्षुण्ण बनाये रखने के लिए विश्व में प्रथमवार वेदादिग्रंथों को ताम्रपत्रों पर उत्कीर्ण कराने का विशिष्ट कार्य किया है।

1. यजुर्वेद 2. सामवेद। 3. अष्टाध्यायी।

4. लिंगानुशासन 5. फिट्सूत्रपाठ

इन सभी का ताम्रपत्रोत्कीर्ण कार्य संपन्न हो चुका है।

प्रकाशन कार्य : प्रकाशन कार्य हेतु ''आर्ष साहित्य संस्थान'' 119 गौतमनगर नई दिल्ली की स्थापना सन् 1998 में की गई है। जो ISBN संख्या प्राप्त है, जिससे निरंतर वेद वेदांगों एवं वैदिक साहित्य के प्रकाशन के साथ–साथ संस्कृत साहित्य एवं अन्य जीवनोपयोगी साहित्य का प्रकाशन निरंतर होता रहा है।

विद्याविलास कार्य : लगभग 100 छात्रों को यजुर्वेद एवं सामवेद कंठस्थ कराया और लगभग 1000 छात्रों को धातुपाठ, अष्टाध्यायी, उणादिकोष आदि ग्रंथ कंठस्थ कराकर संस्कृत एवं वैदिक साहित्य में नैपुण्यता प्राप्त कराकर देश व विदेश के विभिन्न सरकारी, अर्द्धसरकारी व स्वायत्त संस्थाओं को समर्पित किया है।

पुरस्कार– सम्मान :

- दिल्ली संस्कृत अकादमी द्वारा संस्कृत सेवा सम्मान।
- हरियाणा संस्कृत अकादमी द्वारा संस्कृत सेवा सम्मान।
- राव हरीशचंद्र ट्रस्ट द्वारा आर्य रत्न पुरस्कार, एक लाख रुपये की राशि से सम्मान।
- आर्यसमाज बड़ा बाजार, कलकत्ता द्वारा एक लाख रुपये की राशि से सम्मान।

संस्कृत व वेद के प्रचार के लिए विदेश यात्राएं अमेरिका, हॉलैण्ड, मलयेशिया, थाईलैंड, इंडोनेशिया, मॉरीशस आदि देशों में संस्कृत व वैदिक धर्म के प्रचार–प्रसारार्थ यात्राएं की।

व्याख्यानः संस्कृत व वेद के प्रचारार्थ नित्यप्रति संपूर्ण देश में भ्रमण कर जनता को प्रेरित करने का कार्य।

- **अंतर्राष्ट्रीय राष्ट्रीय वैदिक सम्मेलनों के अध्यक्ष :** आर्य प्रतिनिधि सभा अमेरिका एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के संयुक्त तत्त्वावधान में आयोजित आर्य सम्मेलन की सन् 2007 में अध्यक्षता।
- अंतर्राष्ट्रीय गुरुकुल महासम्मेलन हरिद्वार– 2018 में अध्यक्षता
- वैदिक मिशन मुंबई में प्रतिवर्ष आयोजित विभिन्न सम्मेलनों में अध्यक्षता।
- दिल्ली संस्कृत अकादमी के विभिन्न सम्मेलनों की अध्यक्षता।
- हरियाणा संस्कृत अकादमी के विभिन्न सम्मेलनों की अध्यक्षता।
- उत्तर प्रदेश संस्कृत संस्थान के विभिन्न कार्यक्रमों की अध्यक्षता ।

मनोनीत सदस्य : सन् 1991–92 से 1999 तक गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार के सीनेट, (कार्यकारिणी) के सदस्य। सन् 2012 से 2015 तक दिल्ली संस्कृत अकादमी के सदस्य ।

सत्य–असत्य का निर्णय करने का वैदिक विधान

–स्वामी विवेकानन्द परिव्राजक

''न्याय दर्शन में बातचीत करने के चार प्रकार बताए गए हैं। वाद, जल्प, वितंडा और शंका समाधान।'' इन चार प्रकारों से संसार के लोग बातचीत करते हैं। न्याय दर्शन और वेद आदि शास्त्रों में इन 4 में से दो प्रकार की बातचीत को अच्छा माना गया है, पहली और चौथी, अर्थात वाद और शंका समाधान।

''जहां दो व्यक्ति पहले अपने–अपने पक्ष की स्थापना करें, प्रमाण और तर्क से बातचीत करते हुए अपने पक्ष की सिद्धि और दूसरे पक्ष का खंडन करें, लगभग बराबर की योग्यता के हों, सत्य और असत्य का निर्णय करने का उनका लक्ष्य हो, वे पूरी ईमानदारी से बात करें, झूठ छल कपट का प्रयोग न करें, बिना प्रमाण और तर्क के कुछ नहीं बोलें, जो बात पूछी जाए सीधा उसी का उत्तर दें, विषय को इधर–उधर बदलें नहीं, अपनी बात का विरोध स्वयं न करें, जो इस प्रकार की शुद्ध बातचीत होती है, उसे 'वाद' कहते हैं।'' जैसे गणित विज्ञान संगीत भूगोल खगोल दर्शन आदि विषयों के दो ईमानदार विद्वान बैठकर किसी विषय का मतभेद आपस में सुलझा लेते हैं। ''यदि इस वाद के माध्यम से आपस में निर्णय न हो पा रहा हो, तो ऐसी स्थिति में किसी तीसरे विद्वान निष्पक्ष न्यायाधीश की सहायता से आपसी मतभेद का निर्णय कर लेना चाहिए।'' वह तीसरा निष्पक्ष विद्वान न्यायाधीश उन दोनों पक्षों को सुनकर जो भी सत्य निर्णय करे, उस निर्णय को वे दोनों विद्वान स्वीकार करें। यही बुद्धिमत्ता और ईमानदारी है। ''आवश्यकता के अनुसार न्यायाधीशों की संख्या 3, 5, 7, 9 इत्यादि एक से अधिक भी हो सकती है, जैसा कि अधिकतर सर्वोच्च न्यायालय (सुप्रीम कोर्ट) में होता है।''

और जहां पर दो व्यक्तियों के ज्ञान का स्तर अधिक ऊंचा नीचा हो, तो वहां वाद न करके 'शंका समाधान' कर लेना चाहिए, ''जैसे अध्यापक और विद्यार्थी में होता है। विद्यार्थी अपनी शंका, विनम्रतापूर्वक जिज्ञासा भाव से पूछता जाता है। और विद्वान अध्यापक भी उसकी ज्ञान वृद्धि के लिए उसे सत्य समाधान बताता जाता है।''

''न्याय दर्शन और वेद आदि शास्त्रों के अनुसार इन दो प्रकारों से बातचीत करना उचित है। तो जहां जैसी जिसकी योग्यता हो, वह वैसी बातचीत करे।''

बाकी दो प्रकार, जो जल्प और वितंडा हैं, वह तो लड़ाई झगड़ा है। झूठ, छल, कपट, बेईमानी, धोखाधड़ी का प्रयोग है। इससे तो सदा सबको बचना ही चाहिए। ''जो लोग जल्प और वितंडा करते हैं, वे समाज में तथा ईश्वर के न्यायालय में अत्यंत अपराधी हैं। ऐसे लोगों को यदि समाज दंड नहीं दे पाया, तो ईश्वर तो उन्हें बहुत भयंकर दंड देता ही है।'' ''इसलिए झूठ छल कपट से बचें, प्रमाण से परीक्षा किए बिना किसी के विषय में, कुछ भी न बोलें। बुद्धिमत्ता से काम लें, अपना और सबका कल्याण करें। इसी में जीवन की सफलता और आनन्द है।''

सुख चाहो तो सुख दो।

ओ३म्

वैदिक साधन आश्रम

तपोवन, नालापानी, देहरादून

द्वारा आयोजित

शरदुत्सव

आर्य समाज के संस्थापक,
वेदों के उद्धारक एवं युग प्रवर्तक

महर्षि दयानन्द सरस्वती

(1825-1883)

बुधवार, 12 अक्टूबर 2022 से
रविवार, 16 अक्टूबर 2022 तक

आश्रम सोसाइटी के सदस्यगण : विजय कुमार आर्य, ई. प्रेम प्रकाश शर्मा, आचार्य आशीष जी दर्शनाचार्य, स्वामी चित्तेश्वरानन्द जी, सुधीर कुमार माटा, श्याम आर्य, विक्रम बावा, योगेश मुंजाल, डॉ. शशि वर्मा, महेन्द्र सिंह चौहान, योगराज अरोड़ा, कुलदीप चौहान, विनीश आहुजा, अशोक वर्मा, प्रदीप दत्ता, अजय पाल, पुष्पा गुसाईं।

कार्यक्रम के प्रमुख सहयोगी : रणजीत राय कपूर, जीतेन्द्र तोमर, रमेश चन्द, सुशील कुमार भाटिया।

Email : vaidicsadanashram88@gmail.com Web : www.vaidicsadhanashramdehradun.com

शरदुत्सव, योग साधना एवं अथर्ववेद यज्ञ

तद्नुसार बुधवार 12 अक्टूबर से रविवार 16 अक्टूबर 2022 तक मनाया जायेगा।

योग साधना निर्देशक एवं यज्ञ के ब्रह्मा	:	**स्वामी चित्तेश्वरानन्द जी सरस्वती**
वैदिक विद्वान	:	आचार्य डॉ0 वेद पाल जी, पं. उमेश चन्द्र कुलश्रेष्ठ जी, स्वामी योगेश्वरानन्द सरस्वती जी, डॉ0 धन्नजय जी, आचार्य आशीष जी दर्शनाचार्य, डॉ0 सुखदा सोलंकी जी, आचार्य डा0 अन्नपूर्णा जी, साध्वी प्रज्ञा जी, पं. सूरत राम शर्मा जी, पं. वेद वसु शास्त्री जी, श्रीमती सुरेन्द्र अरोड़ा जी
वेद पाठ	:	श्रीमद दयानन्द आर्ष ज्योर्तिमठ गुरूकुल पौंधा के ब्रह्मचारियों द्वारा
यज्ञ तथा अन्य कार्यक्रमों के संचालक	:	पंडित सूरतराम शर्मा जी, श्री शैलेश मुनि सत्यार्थी जी
भजनोपदेशक	:	श्री दिनेश पथिक जी, महात्मा आर्यमुनि जी एवं श्रीमती मीनाक्षी पंवार जी

बुधवार 12 अक्टूबर से रविवार 16 अक्टूबर 2022 तक प्रतिदिन

योग साधना : प्रातः 4.00 से 6.00 बजे तक	यज्ञ एवं संध्या : प्रातः 3.00 से 5.30 बजे तक
संध्या एवं यज्ञ : प्रातः 6.30 से 9.00 बजे तक	भजन एवं प्रवचन : रात्रि 07.00 से 09.00 बजे तक
भजन एवं प्रवचन : प्रातः 10 से 12 बजे तक	

बुधवार दिनांक 12 अक्टूबर 2022

ध्वजारोहण	:	प्रातः 9:00 बजे – श्री उमेश शर्मा 'काऊ' जी के करकमलों से
यज्ञ के यजमान	:	श्री विजय सचदेवा एवं परिवार
कार्यक्रम के अध्यक्ष	:	श्री चन्द्रगुप्त विक्रम जी
भजन	:	श्री दिनेश पथिक जी, महात्मा आर्यमुनि जी
प्रवचन विषय प्रातः	:	
वक्ता प्रातः सत्र	:	आचार्य डा0 वेद पाल जी, आचार्य आशीष जी, साध्वी प्रज्ञा जी
प्रवचन विषय सांय	:	
वक्ता सांयकाल सत्र	:	पं0 उमेश चन्द्र कुलश्रेष्ठ जी, श्री शैलेश मुनि सत्यार्थी जी

युवा सम्मेलन – गुरूवार दिनांक 13 अक्टूबर 2022

कार्यक्रम के अध्यक्ष	:	डा० कृष्ण कान्त वैदिक शास्त्री
भजन	:	श्री दिनेश पथिक जी
प्रवचन विषय प्रातः	:	
वक्ता प्रातः सत्र	:	आचार्य आशीष जी दर्शनाचार्य, स्वामी योगेश्वरानन्द जी, आचार्य डा0 धन्नजय जी
प्रवचन विषय सायं	:	
वक्ता सांयकाल सत्र	:	पं. उमेश चन्द्र कुलश्रेष्ठ जी, आचार्य डा0 वेद पाल जी

महिला सम्मेलन – शुक्रवार, दिनांक 14 अक्टूबर 2022

मुख्य अतिथि	:	श्रीमती मीना अग्रवाल जी
कार्यक्रम की अध्यक्ष	:	साध्वी प्रज्ञा जी
भजन	:	श्रीमती मीनाक्षी पंवार जी एवं द्रोणस्थली आर्ष कन्या गुरूकुल की ब्रह्मचारिणियाँ
प्रवचन विषय प्रातः	:	
वक्ता प्रातः सत्र	:	आचार्य डा0 वेद पाल जी, आचार्य डा0 अन्नपूर्णा जी, डा0 सुखदा सोलंकी जी
सांयकाल विषय सांय	:	
वक्ता सांयकाल सत्र	:	पं0 उमेश चन्द्र कुलश्रेष्ठ जी, आचार्य आशीष जी दर्शनाचार्य

योग एवं उपासना सम्मेलन – शनिवार, 15 अक्टूबर 2022

कार्यक्रम के अध्यक्ष	:	स्वामी चित्तेश्वरानन्द सरस्वती जी
भजन	:	श्री दिनेश पथिक जी, महात्मा आर्यमुनि जी
प्रवचन विषय प्रातः	:	
वक्ता प्रातः सत्र	:	आचार्य डा0 वेद पाल जी, पं. उमेश चन्द्र कुलश्रेष्ठ जी, आचार्य आशीष जी, साध्वी प्रज्ञा जी
सांयकाल भजन संध्या	:	श्री दिनेश पथिक जी एवं श्रीमती मीनाक्षी पंवार जी

नोटः शनिवार को प्रातः कालीन यज्ञ एवं भजन प्रवचन के कार्यक्रम तपोभूमि (पहाड़ी पर) आयोजित किये जायेंगे।

रविवार, 16 अक्टूबर 2022

समापन समारोह	:	प्रातः 10:00 से 1:00 बजे तक
मुख्य अतिथि	:	
विशिष्ट अतिथि	:	
सभाध्यक्ष	:	श्री विजय कुमार आर्य जी, अध्यक्ष तपोवन आश्रम, देहरादून
कार्यक्रम संचालक	:	श्री शैलेष मुनि सत्यार्थी
अतिथियों का स्वागत	:	इं0 प्रेम प्रकाश शर्मा (सचिव तपोवन आश्रम),
भजन	:	श्री दिनेश पथिक जी, महात्मा आर्यमुनि जी
प्रवचन विषय	:	
वक्ता	:	पं. उमेश चन्द्र कुलश्रेष्ठ, आचार्य डा0 वेद पाल जी, आचार्य आशीष जी स्वामी चित्तेश्वरानन्द जी, साध्वी प्रज्ञा जी, डॉ अन्नपूर्णा जी
सम्बोधन	:	अतिथियों द्वारा सम्बोधन
धन्यवाद ज्ञापन	:	आश्रम के अध्यक्ष श्री विजय कुमार आर्य जी द्वारा धन्यवाद ज्ञापन
ऋषिलंगर	:	समापन समारोह के उपरान्त ऋषिलंगर की व्यवस्था

आंमत्रित वैदिक विद्वान एवं अतिथिगण

डॉ. नवदीप जी, डॉ. कृष्णकान्त वैदिक शास्त्री जी, श्री मनमोहन आर्य जी, श्री एस.एस. वर्मा जी,
श्री गोविन्द सिंह भण्डारी जी, श्री दयाकृष्ण कांडपाल जी, श्री ओमप्रकाश मलिक जी, श्री सुधीर गुलाटी जी,
डॉ. महेश कुमार शर्मा जी, श्री राजकुमार भण्डारी जी, श्री महावीर सिंह जी, श्री अतर सिंह जी, श्री अजय त्यागी जी,
श्री धर्मपाल शर्मा जी, श्री तीरथ कुकरेजा जी, श्री संजय जैन जी, श्री पंकज त्यागी जी,
श्री नरेन्द्र वर्मा जी, श्री रामपाल रोहिला जी, श्री अरविन्द शर्मा जी, श्री दयानन्द तिवारी जी,
डॉ. बृजपाल आर्य जी, श्री नरेन्द्र साहनी जी, श्री ओमप्रकाश महेन्द्रू जी, श्रीमती कान्ता काम्बोज जी,
श्री ज्ञानचन्द गुप्ता जी, श्री भगवान सिंह जी, श्री शत्रुघन कुमार मौर्य जी, श्री जीतेन्द्र सिंह तोमर जी,
श्री महिपाल सिंह जी, श्री रमेश भारती जी, श्री उम्मेद सिंह विशारद जी, श्री रणजीत राय कपूर जी,
श्रीमती ऊषा जी, डॉ. विश्वमित्र शास्त्री जी, श्री ओमप्रकाश अग्रवाल जी, श्री मानपाल सिंह जी, श्री दिनेश आर्य जी,
श्री हाकम सिंह जी, श्रीमती पुष्पा गुसाईं, श्री वेद प्रकाश धीमान जी, श्री प्रदीप दत्ता जी,
श्री पी.डी. गुप्ता जी, श्री केसर सिंह जी, श्री रतन सिंह जी, श्री महिपाल सिंह त्यागी जी,
श्री रामबाबू सैनी जी, श्रीमती सविता अग्रवाल जी, श्री बृजेश शर्मा जी, श्री चन्द्रगुप्त विक्रम जी,
श्री पी. डी. गुप्ता जी, डा आनन्द सुमन जी, श्रीमती मीना अग्रवाल जी,
श्री सिद्धार्थ अग्रवाल जी एवं सभी आर्यसमाजों के प्रधान, मंत्री एवं कोषाध्यक्ष

निवेदक

विजय कुमार आर्य, ई. प्रेम प्रकाश शर्मा, आचार्य आशीष जी दर्शनाचार्य, स्वामी चित्तेश्वरानन्द जी, सुधीर कुमार माटा, श्याम आर्य, विक्रम बावा, योगेश मुंजाल, डॉ. शशि वर्मा, महेन्द्र सिंह चौहान, योगराज अरोड़ा, कुलदीप चौहान, विनीश आहुजा, अशोक वर्मा, प्रदीप दत्ता, अजय पाल, पुष्पा गुसाईं, रणजीत राय कपूर, जीतेन्द्र तोमर, रमेश चन्द, सुशील कुमार भाटिया

एवं समस्त सदस्य वैदिक साधन आश्रम सोसायटी, देहरादून।

सृष्टि की उत्पत्ति और इतर सभी अपौरुषेय रचनायें ईश्वर के अस्तित्व के प्रमाण

-मनमोहन कुमार आर्य

हम संसार में अनेक रचनायें देखते हैं। रचनायें दो प्रकार की होती हैं। एक पौरुषेय और दूसरी अपौरुषेय। पौरुषेय रचनायें वह होती हैं जिन्हें मनुष्य बना सकते हैं। हम भोजन में रोटी का सेवन करते हैं। यह रोटी आटे से बनती है। इसे मनुष्य अर्थात् स्त्री वा पुरुष बनाते हैं। मनुष्य द्वारा बनने से रोटी पौरुषेय रचना है। रोटी में जो आटा प्रयोग होता है वह गेहूं, मक्की, बाजरा, ज्वार आदि का हो सकता है। हम गेहूं आदि से आटा तो बना सकते हैं परन्तु गेहूं को नहीं बना सकते। गेहूं, गेहूं के बीज से ही उत्पन्न होता है। उस बीज को किसान अपौरूषेय सत्ता (ईश्वर) द्वारा बनाई गई भूमि में बोता है। भूमि व खेत में खाद व पानी देता है तथा खेत की निराई व गुड़ाई करता है। ऐसा करने पर गेहूं की फसल तैयार होती है जिसमें उसके द्वारा बोये गये बीजों से कही अधिक मात्रा में गेहूं प्राप्त होता है। किसान नहीं जानता कि भूमि, बीज, जल, खाद, वायु व सूर्य की धूप से यह गेहूं व अन्य फसलें कैसे बन जाती है? किसान ने अपना काम किया और परमात्मा व उसके विधान अपना कार्य करते हैं। यह गेहूं पौरुषेय नहीं अपितु अपौरुषेय रचना है। अपौरुषये रचना वह होती है जिसे मनुष्य नहीं कर सकता। हम सूर्य, चन्द्र, पृथिवी, मनुष्य आदि प्राणी, वनस्पति व प्रकृति के अनेक पदार्थों को देखते हैं जिन्हें मनुष्य नहीं बना सकता। यह अपौरूषेय रचनायें हैं। इन्हें बनाने वाली सत्ता मनुष्य से भिन्न है जो चेतन एवं ज्ञानवान होने सहित सर्वदेशी व सर्वव्यापक भी है। उसे संसार की सभी अपौरूषेय रचनाओं का पूर्ण ज्ञान, बनाने व नष्ट करने का अनुभव है। इससे पूर्व भी अनादि काल से वह ऐसा करता आ रहा है। उसका ज्ञान नित्य है जो कभी न्यून व वृद्धि को प्राप्त नहीं होता है। उस अपौरुषेय सत्ता जो सत्, चित्त व आनन्दस्वरुप है, उसी को ईश्वर कहते हैं। सर्वातिसूक्ष्म, निराकार व सर्वव्यापक होने के कारण से वह आंखों से दिखाई नहीं देती। हम आंखों से वायु के कणों व जल की वाष्प को भी नहीं देख पाते। कोई वस्तु बहुत दूर हो तो वह भी दिखाई नहीं देती। आकाश में सुदूर कोई पक्षी उड़ रहा हो या विमान बहुत अधिक ऊंचाई पर हो तो वह भी आंखों से दिखाई नहीं देता। दाल व रोटी में नमक मिला दिया जाये तो नमक के सूक्ष्म रूप में होने पर वह भी आंखों से दिखाई नहीं देता। इससे यह ज्ञात होता है कि सूक्ष्म, अत्यन्त निकट व अत्यन्त दूर की वस्तुयें भी हमें दिखाई नहीं देती हैं।

हम संसार में अनेक पौरुषेय रचनाओं को देखते हैं जैसे की पुस्तक, फर्नीचर, मकान, वस्त्र, घड़ी, टेलीफोन, कार, स्कूटर, कम्प्यूटर, रेलगाड़ी, विमान आदि। यह सभी मनुष्यों द्वारा बनाई गई पौरुषेय रचनायें हैं। इसके साथ ही हम इस ब्रह्माण्ड में लोक लोकान्तर सहित सूर्य, चन्द्र व पृथिवी आदि को देखते हैं तथा फूलों व मनुष्य आदि प्राणियों को देखते हैं। इन सब विशेष रचनाओं को ज्ञान, बल आदि का प्रयोग कर रचा गया है। यह सब ईश्वर के द्वारा बनी रचनायें हैं। ऋषि दयानन्द ने सत्यार्थप्रकाश में सिद्धान्त दिया है कि रचना विशेष को देखकर रचयिता विशेष का ज्ञान होता है। रंग बिरंगे फूल बहुत मनमोहक व चित्ताकर्षक होते हैं। उनमें सुगन्ध भी होता है। सभी फूलों का सुगन्ध व उनका रंग, रूप एवं आंकृति भी भिन्न भिन्न होती है। मनुष्य के वश में नहीं की वह इन फूलों को बना सके। यह रचना विशेष है और इसे किसी गुण व ज्ञानवान सत्ता द्वारा बनाया गया प्रतीत व अनुभव होता है। जहां रचना होती है वहां रचयिता की उपस्थिति भी अवश्य होती है। अतः रचना विशेष फूल को देखकर इसके रचयिता विशेष ईश्वर का ज्ञान हो जाता है। जो इस सिद्धान्त को नहीं मानते उनके पास यह सिद्ध करने के लिए कोई तर्क नहीं होते कि संसार में कोई एक बुद्धिपूर्वक रचना व पदार्थ

बिना किसी चेतन रचनाकार के बनायें बन सकते हैं। रचना विशेष का स्वमेव बन जाना एक असम्भव सिद्धान्त है। अतः सभी बुद्धिपूर्वक रची गई अपौरूषेय रचनाओं का रचयिता सच्चिदानन्दस्वरूप ईश्वर ही सिद्ध होता है।

गुण और गुणी के सिद्धान्त से भी हम ईश्वर का साक्षात कर सकते हैं अर्थात् उसे समझ व जान सकते हैं। हम जो भी पदार्थ देखते हैं उन पदार्थों में कुछ गुण निहित होते हैं। हम उन पदार्थों के परीक्षण एवं उपयोग द्वारा उन पदार्थों के गुणों का साक्षात करते हैं उन गुणों के स्रोत गुणी का नहीं। यह गुणी जिसकी विद्यमानता से किसी पदार्थ में गुण प्रकाशित होते हैं वह 'गुणी' दृष्टिगोचर नहीं होता। विशेष रचनाओं का रचयिता जो गुणी होता है, जिससे उत्पन्न व प्रदत्त गुणों से वह पदार्थ उपयोग में लाया जाता है, उसे ही परमेश्वर कहा जाता है। यह गुणी रचनाकार आंखों से दिखाई नहीं देता परन्तु वह पदार्थों में व्यापक वा विद्यमान रहता है। उसके रचना विशेष आदि गुण तो प्रकाशित होते हैं परन्तु उन रचनाओं का रचयिता गुणी जिसके की वह गुण हैं, वह दिखाई नहीं देता। इसी प्रकार संसार के सभी अपौरुषेय पदार्थ ईश्वर कृत रचनायें हैं और उनका रचयिता ईश्वर है। इन अपौरुषेय रचनाओं से ईश्वर के अस्तित्व होने का प्रत्यक्ष ज्ञान होता है।

ईश्वर की संसार में विद्यमानता मनुष्य के सुख व दुःखों को देखकर भी होती है। कोई मनुष्य नहीं चाहता कि वह दुःखी हो। सभी मनुष्य सुख चाहते हैं। इस पर भी कुछ मनुष्य सुखी और कुछ दुःखी देखे जाते हैं। इस दुःख का कारण क्या है? कौन हमें यह कायिक व मानसिक दुःख देता है? सुख व दुःख देने वाली सत्ता चेतन व व्यापक ही हो सकती है। इसका कारण जानने पर हमारे कर्म ही हमारे सुख व दुःखों का कारण विदित होते हैं।

यह सारा संसार व इसकी सारी व्यवस्था परमात्मा के वश में है। वही हमारे कर्मों के अनुसार हमें सुख व दुःख देता है व उनका भोग कराता है। दुःख का कारण हमारे पाप व अशुभ कर्म होते हैं। यदि हम दुःख प्राप्त करना नहीं चाहते तो हमें अपने जीवन में अशुभ व पाप कर्मों से सर्वथा दूर रहना होगा। यह सुख व दुःख क्या अज्ञानी और ज्ञानी सभी को प्राप्त होते हैं। अज्ञानी दुःख आने पर विचलित हो जाता है, रोता व चिल्लाता है, विलाप करता है, माता, पिता व ईश्वर को याद करता है और ज्ञानी दुःखों को अपने अतीत व पूर्वजन्म के कर्मों का फल मानकर धैर्यपूर्वक सहन करते हैं। मन में ईश्वर के मुख्य नाम ओ३म् व गायत्री आदि मन्त्रों का जप करते हैं। इससे दुःख सहन करने में ईश्वर से शक्ति प्राप्त होती है और कर्म भोग पूरा व समाप्त होने पर वह दुःख समाप्त हो जाता है।

अतः अनेक प्रकार से ईश्वर का होना सिद्ध होता है। वेद भी ईश्वर का ज्ञान कराते हैं। वेदों में जो ज्ञान है वह भी ईश्वर के अस्तित्व का प्रमाण है। वेदों का ज्ञान निश्चयात्मक ज्ञान है। सृष्टि के आरम्भ में यदि ईश्वर न होता तो भाषा का आविष्कार वा उपलब्धि भी कभी न होती। सृष्टि के आरम्भ में संस्कृत जैसी उत्कृष्ट भाषा व ईश्वर, जीव व प्रकृति का यथार्थ व निश्चयात्मक ज्ञान प्राप्त होना ईश्वर के अस्तित्व का प्रमाण हैं। हमें वेदाध्ययन कर ईश्वर व आत्मा का ज्ञान प्राप्त कर वेदविहित कर्म ईश्वरोपासना, यज्ञ–अग्निहोत्र, माता–पिता–आचार्यों व अतिथियों की सेवा, परोपकार व दान आदि के कामों को करके अपने जीवन को सुखी व कल्याणप्रद बनाना चाहिये।

श्रद्धांजलि

श्रीमती सविता आर्य पत्नी पं. नरेश दत्त आर्य के दिनांक 30 जून 2022 को आकस्मिक निधन के समाचार से उत्तराखण्ड के समस्त आर्यजनों में शोक की लहर फैल गई। श्रीमती सविता आर्य ने अपने पतिदेव के साथ मिलकर अपने पूरे परिवार को आर्य परम्पराओं में इस प्रकार दीक्षित किया की आज सभी जगह इस परिवार की उपमा दी जाती है। श्री नरेश दत्त आर्य जी ने अपने पुत्रों के साथ मिलकर वैदिक धर्म की पताका पूरे भारत वर्ष में फहराई हुई है। वैदिक साधन आश्रम तपोवन एवं उत्तराखण्ड के समस्त आर्य समाजों की ओर से स्व. श्रीमती सविता आर्य जी को भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं। ओ३म शांतिः शांतिः शांतिः

कर्म सिद्धांत

-डॉ महेश कुमार शर्मा

कर्म ही मानव–जीवन है। इसका मुख्य उद्देश्य मनुष्य–जीवन को गढ़ना ही है। कर्म ही मनुष्य की शोभा है, उसका गौरव है। मानव–जीवन की सार्थकता है। कर्म तो अवश्यम्भावी है, मनुष्य को कर्म तो करना ही पड़ेगा, किन्तु सर्वोच्च ध्येय को सम्मुख रखकर ही कर्म करना चाहिए।

कर्म के मौलिक सिद्धांत तो सर्वतंत्र हैं। मनुष्य जीवन भर सत्कर्म करते हुए, सेवा धर्म निभाते हुए जीवे। निठल्ला, निष्क्रिय या निष्कर्म होकर न जीवे, क्योंकि कर्म ही पूजा है, कर्म ही उन्नति का मार्ग है और सफलता की कुंजी है।

वेदों में सर्वत्र मनुष्य को श्रेष्ठ कर्म करने की प्रेरणा देते हुए जीवन में प्रगति, सौभाग्य और धन अर्जन कर दानादि देकर समाज, देश, राष्ट्र तथा विश्व के लिए कल्याण कर्म करना उसका परम कर्तव्य बताया गया है। वेद का आदेश है– ''कृण्वन्तो विश्वमार्यम्।'' सारे विश्व के लोगों को आर्य (श्रेष्ठ) बनाओ।

मनीषियों ने कर्म की परिभाषा इस प्रकार की है– "यत्क्रियते तत्कर्म।" अर्थात् जो कुछ किया जाता है, उसे कर्म कहते हैं। कर्म शब्द "कृ" धातु से निकला है । "कृ" धातु का अर्थ है, करना। कर्म का अभिप्राय है, चेतन द्रव्य की सोची समझी क्रिया, जड़ द्रव्य की क्रिया कर्म नहीं कहलाती। पृथ्वी का अपनी धुरी पर घूमना, सूर्य की ग्रहों द्वारा परिक्रमा करना क्रियाएँ तो हैं, पर कर्म नहीं। कर्म उन्हें ही कहते हैं, जो चेतन–द्रव्य–आत्मा द्वारा निश्चयपूर्वक क्रिया रूप में किये जाते हैं। आँख का झपकना, साँस लेना, दिल का धड़कना आदि नैसर्गिक क्रियाएँ भी कर्म के अन्तर्गत आती हैं।

जीवात्मा और कर्म का स्वाभाविक संबंध है। जीवात्मा बिना कर्म किये नहीं रह सकता है। मनुष्य–जीवन का सबसे जटिल तथा महत्वपूर्ण विषय है–कर्म तथा इन कर्मों से प्राप्त होने वाला फल। वैदिक मान्यता है कि जीवात्माएँ कर्म करने में स्वतंत्र हैं और फल पाने में अपने कर्म के अधीन हैं। प्रत्येक जीवात्मा को ईश्वर की न्यायव्यवस्था में अपने अच्छे तथा बुरे कर्मों का फल भोगना पड़ता है। शुभ कर्मों का फल सुख तथा अशुभ कर्मों का फल दुःख जीवात्माएँ भोगती हैं।

कुछ कर्मों का फल दृश्य होता है, जो इस लोक और इस जन्म में प्राप्त होता है और अन्य कर्मों का फल अदृश्य है, जो जन्म–जन्मांतर में मिलता है, जिसे जीव उपर्युक्त कर्मानुसार भोगता है।

कर्मफल के विषय में कोई त्रुटि कभी नहीं होती और ईश्वर द्वारा किसी की सिफारिश भी नहीं सुनी जाती। कर्मफल रूपी तराजू पूर्ण है, बिना किसी घटा–बढ़ी के सुरक्षित रखी है। पकाने वाले को पकाया हुआ पदार्थ कर्मफल के रूप में आ मिलता है, प्राप्त हो जाता है।

यजुर्वेद के ४० वें अध्याय में महर्षि वायु के अनुसार–

"कुर्वन्नेवेह कर्माणि जिजीविषेच्छतँ्माः।
एवं त्वयि नान्यथेतोशस्ति न कर्म लिप्यते नरे।।"

(यजुः ४०.२)

अर्थात् इस संसार में मनुष्य कर्म करते हुए जीने की इच्छा करे, इसके सिवाए दूसरा कोई और मार्ग नहीं। कर्म नर व्यक्ति को लिप्त नहीं कर सकता। यदि किया हुआ कर्म व्यक्ति को लिप्त कर

ले, आसक्त कर ले, आबद्ध कर ले तो व्यक्ति नर नहीं रहता, जन बन जाता है । नर तो है ही वह, जो रमता नहीं, "न रमते इति नरः।"

महाभारतकालीन नर व्यक्ति ही स्वजनों में आसक्त हो गया और अपने कर्तव्य–कर्म को भूल बैठा। नर को जन बनता देख, योगेश्वर श्री कृष्ण महाराज द्वारा अर्जुन को गीतोपदेश देकर कहना पड़ा –

"कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन ।
मा कर्मफलहेतुर्भूर्मा ते संगोश्स्त्वकर्मणि।।"

(गीताः २.४७)

अर्थात् हे अर्जुन! तेरा कर्म में ही अधिकार है, उसके फल में कभी नहीं। तू कर्मफल का हेतु मत बन, अकर्म में तेरी प्रीति नहीं होनी चाहिए। अकर्म वह है जिससे लोकहित का विघात होता है। कर्म करना तो कर्त्ता के अधीन है, किन्तु उसका फल देना विधाता के अधीन है, कर्त्ता के अधीन नहीं।

महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती जी श्रेष्ठ कर्म करने के लिए सदैव प्रेरित करते रहे, उनका मानना था कि मानव धर्म श्रेष्ठ है तथा मानवता के कल्याण में मनसा, वाचा, कर्मणा संलग्न रहना चाहिए। महाभारत में कहा गया है–

"कर्मणा मनसा वापि वाचा वापि परंतप।
यन में कृतं बराह्मणेषु तेनाद्य न तपाम्य अहम"

(महाभारतः १३.८.१६)

मनसा का अर्थ मन है, वाचा का भाषण और कर्मणा का अर्थ कुछ काम करना होता है। मनसा, वाचा, कर्मणा का अर्थ आमतौर पर यह लगाया जाता है कि व्यक्ति को उस स्थिति को प्राप्त करने का प्रयत्न करना चाहिए, जहां उसके विचार, वाणी और कर्मों का आपसी संयोग हो।

स्वामी दयानन्द जी कहा करते थे–वह देश ही सुखी, संपन्न तथा स्वस्थ माना जाता है, जहां के लोग कर्मशील व धार्मिक हों। इसलिए ही ज्ञान, कर्म तथा उपासना को भौतिक सुख तथा आध्यात्मिक आनंद प्राप्ति का श्रेष्ठ साधन माना गया है। इससे हम जहां सांसारिक जीवन को सुखी बना सकते हैं, वहीं हम ईश्वर प्राप्ति कर मोक्ष के मार्ग को प्रशस्त करते हैं। जीवन में अच्छाई और सच्चाई के रास्ते पर चलने हेतु कितने भी श्रम तथा संघर्ष करने पड़े तो भी उत्तमोत्तम हैं, क्योंकि यह पथ ब्रह्म के निकट जाने का सर्वोत्तम एवं सरल साधन है। विवेक, वैराग्य के द्वारा अपने कर्तव्य–पथ को पहचान कर व आत्मसाक्षात्कर कर परमात्मा को पाना ही जीवन की सफलता है।

महर्षि दयानंद जी ने कहा है कि अगर मनुष्य का मन शांत, प्रसन्न, आह्लादित, निर्भीक, उत्साहित व सम्मानित है तो निश्चित ही यह अच्छे कामों का फल है और यदि उसका मन खिन्न, लज्जित, मलिन, भयभीत, अपमानित और आक्रोषित है तो अवश्य ही यह बुरे कामों का फल है। यदि आपके अन्दर संतोष है तो आप सबसे संपन्न व्यक्ति हैं, यदि शांति है तो आप सबसे सुखी हैं और यदि दया है तो आप बहुत अच्छे इंसान हैं । सुख, संपत्ति में परमेश्वर का धन्यवाद और दुःख, विपत्ति में संतोष करने से मनुष्य का अन्तःकरण पवित्र होता है ।

ऐसी मान्यता है कि शुभ कर्म करनेवाले, परोपकारी श्रेष्ठ जनों को ईश्वर सुख ही देगा। वैदिक धर्म तो श्रेष्ठ आचरण को महत्व देता है। यही सुख–दुःख की एक मात्र कसौटी है। सृष्टि नियमों को ध्यान में रखते हुए ज्ञानपूर्वक किया गया कर्म ही सद्कर्म है। यही श्रेष्ठाचरण है। जिन्दगी में जितनी भी कठिनाइयाँ आती हैं, जितने भी दुःख, दोष हैं, वे अज्ञानता की वजह से हैं।

ऋग्वेद के अनुसार–"उर्ध्वां दधानः शुचिपेशसं धियम्।" अर्थात् विद्वान अपनी बुद्धि को उत्तम कार्यों में लगाते हैं। सदाचारी व्यक्ति सदा सुखी रहता है ।

लाभ–हानि, सुख–दुःख, मान–अपमान, यश–अपयश, धनधान्यता–निर्धनता, उन्नति–अवनति, सफलता–असफलता जीवन के संग रहते हैं। जीवन में समभाव रखकर ही मनुष्य को कर्म करना चाहिए। अच्छों के साथ अच्छे बने, पर बुरों के साथ बुरे नहीं क्योंकि हीरे से हीरा तो तराशा जा सकता है लेकिन कीचड़ से कीचड़ साफ नहीं किया जा सकता। कोई हमारा बुरा करे, यह उसका कर्म है, लेकिन हम किसी का बुरा ना करें, यह हमारा धर्म है। मनुष्य जब अपने अनुभव, ज्ञान, चिंतन व आचरण से कोई कर्म करता है तो वह कामयाबी की मंजिल को पाने में सफल होता है। पूर्व में किए गए कर्मों के आधार पर, सुख–दुःख तो अतिथि के रूप में, बारी–बारी से मनुष्य के जीवन में अवश्य आयेंगे और चले जायेंगे, यदि वे नहीं आयेंगे, तो हम जीवन में कर्मफल के अनुसार अनुभव कहाँ से लायेंगे। बिना निमंत्रण दिये आये पाहुन के समान हमें हर दशा में उनका स्वागत, सत्कार करना चाहिए।

भगवद्गीता में हमें इस बात का बारम्बार उपदेश मिलता है कि हमें निरन्तर कर्म करते रहना चाहिए । गीता (३.५) में कहा गया है–

"न हि कश्चित्क्षणमपि जातु तिष्ठत्यकर्मकृत्।"

अर्थात् कोई भी मनुष्य किसी भी अवस्था में, क्षणमात्र भी कर्म किये बिना नहीं रह सकता, क्योंकि हर पल मनुष्य मन, शरीर और वाणी से कुछ न कुछ कर रहा है।

गीता (१८.१५) का वचन है–

"शरीरवांगमनोभिर्यत्कर्म प्रारभते नः।"

अर्थात् शरीर, वाणी और मन से की गई क्रियाएँ कर्म हैं यानी शरीर–निर्वाह–संबंधी क्रियाएँ, नींद, चिंतन, ध्यान, समाधि आदि क्रियाएँ, ये सब कर्म हैं।

कर्म स्वभावतः ही सत्–असत् से मिश्रित होता है। हम ऐसा कोई भी कर्म नहीं कर सकते जिससे कहीं कुछ भला न हो और ऐसा भी कोई कर्म नहीं है, जिससे कहीं–न–कहीं कुछ हानि न हो। प्रत्येक कर्म अनिवार्य रूप से गुण–दोष से मिश्रित रहता है, परन्तु फिर भी शास्त्र हमें सतत् कर्म करते रहने का ही आदेश देते हैं। सत् और असत् दोनों का अपना अलग–अलग फल होगा। सत् कर्मों का फल सत् होगा और असत् कर्मों का फल असत्। परन्तु सत् और असत् दोनों ही आत्मा के लिए बन्धन स्वरूप हैं। इस संबंध में गीता का कथन है कि यदि हम अपने कर्मों में आसक्त न हों तो हमारी आत्मा पर किसी प्रकार का बन्धन नहीं पड़ सकता। कर्मों में अनासक्ति का तात्पर्य यह है कि निरन्तर कर्म करते रहो, परन्तु उसमें आसक्त मत होओ।

कर्म को प्रधानता देते हुए कहा गया है –

"कर्म प्रधान ऋषि–मुनि गावें।
यथा कर्मफल तैसहि पावें।।"

विचारकों और धर्मवेत्ताओं के अनुसार–"मन चंगा तो कठौती में गंगा।" अर्थात् मन से पाक–साफ हुए बगैर न तो आत्मा में परमात्मा की ज्योति आ सकती है और न ही परमात्मा के सच्चे भक्त बन सकते हैं। मन और चित्त की सफाई ही परमात्मा के पास पहुँचने का सबसे बढ़िया रास्ता है। यही इंसानी धर्म है और यही मनुष्य के लिए शुभ कर्म करते हुए समाज, राष्ट्र व विश्व कल्याण के लिए सबसे बेहतर विधान है।

श्रेष्ठ कर्मों को करने के लिए तथा भक्ति और धर्म के रास्ते पर चलने के लिए मन की पवित्रता जरूरी है, न कि तिलक छाप, कंठीमाला। सत्य के लिए सत्य का ही मार्ग होना चाहिए और वह है, ईश्वरीय सत्ता। सत्य बोलना ही केवल सत्य नहीं, वरन् सत्य मानना और सत्य करना ही जब साथ होगा तभी वह पूर्ण सत्य हो सकेगा, अन्यथा नहीं। महर्षि दयानंद जी सत्यार्थप्रकाश की भूमिका में लिखते हैं– "मनुष्य का आत्मा सत्यासत्य का जाननेवाला है, सत्यासत्य को मनुष्य लोग जानकर सत्य का ग्रहण और असत्य का परित्याग करें, क्योंकि सत्योपदेश के बिना अन्य कोई भी मनुष्य जाति की उन्नति कारण नहीं।" सत्य की भूख सभी को होती है लेकिन जब यह परोसा जाता है तो बहुत कम लोगों को इसका स्वाद पसन्द आता है।

मनुष्य द्वारा अपने भावों एवं विचारों का मनन कर उन्हें कार्यरूप में परिणत करना ही कर्म है। काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार बढ़ जाने से मनुष्य के भाव व विचार अपवित्र हो जाते हैं जो उसके कर्तव्य–कर्म पर अपना प्रभाव डालते हैं। काम की दीप्ति से मनुष्य की दृष्टि में दोष उत्पन्न हो जाता है, क्रोध की अधिकता से मनुष्य हिताहित को भूल जाता है, लोभ की वृद्धि से मनुष्य प्रत्येक पाप कर डालता है, मोह के बढ़ जाने से मनुष्य अपने कर्तव्य से पतित हो जाता है और अहंकार परमेश्वर प्राप्ति में विघ्नकारी है। ऐश्वर्य में परमात्मा को भूल जाना, पुरुषार्थ करने में हिचकिचाना, सेवा भाव में सुस्ती को लाना, व्यर्थ बातों में समय का जाना, बात–बात में रोष को दिखाना, दरिद्रता, दैन्य भाव के लक्षण हैं, जो कलह की जड़ है।

मानव–जीवन तीन पृष्ठों का है। पहला पृष्ठ, जन्म और अन्तिम पृष्ठ, मृत्यु विधाता ने लिख दी है। कर्मभूमि की दुनिया में कार्य सभी को करना है। पुरुषार्थ, प्यार और भक्ति द्वारा, बीच के सादे–कोरे पृष्ठ पर अपनी इच्छानुसार स्वतंत्र रूप से मनन, चिंतन, हृदयंगम करना, विचारना, लिखना, चित्र बनाना और उनमें रंग भरना ही मनुष्य का कर्तव्य–कर्म है।

खेत में बोए हुए सभी बीज अंकुरित नहीं होते परन्तु जीवन में किये गये अच्छे और बुरे कर्मों का एक भी बीज व्यर्थ नहीं जाता। सत् और असत् कर्मों का फल सुख–दुःख के रूप में अवश्य मिलता है। आपने जो कर्म किया है, ईश्वर न्यायपूर्वक उस कर्म का फल आपको देगा और आपको उसे स्वीकार करना पड़ेगा, चाहे वह आपकी इच्छा के अनुकूल हो, या प्रतिकूल हो। कर्मफल का मूल उद्देश्य सद्गुणों का विकास कर सुधार करना है। जो पूर्वापर विचार कर कार्य करता है, वह सुख पाता है और जो इससे उल्टा चलता है, वह दुःख उठाता है। सुख–दुःख मनुष्य के केवल दृष्टिकोण पर ही निर्भर करता है। मनुष्य अपने आप को सबसे कम पापी और सबसे अधिक दुःखी समझता है।

कर्मशील पुरुषार्थी मनुष्य को जीवन में यह ध्यान रखना चाहिए कि अगर आप उड़ नहीं सकते, तो दौड़िए। दौड़ नहीं सकते, तो चलिए। यदि चल भी नहीं सकते, तो रेंगिए, यानी कुछ भी हो, शुभ कर्म करते हुए, लक्ष्य की ओर हमेशा आगे बढ़ते रहिए। आप कोई भी कार्य करें, उसमें पूरी तरह डूब कर करें, परिणाम अपने आप आयेंगे।

गीता में कहा गया है–

"यत्तदग्रे विषमिव परिणामेश्मृतोपमम्।
तत्सुखं सात्त्विकं प्रोक्तमात्मबुद्धिप्रसादजम्।"
(गीता : १८.३७)

अर्थात् जो–जो विद्या और धर्म प्राप्ति के कर्म हैं, वे प्रथम विष के समान अप्रिय और परिणाम में

अमृत के सदृश सुखप्रद होते हैं।

जीव के हर जन्म में संचित, क्रियमाण और प्रारब्ध कर्म होते हैं। एक जन्म का क्रियमाण कर्म ही दूसरे जन्म का संचित कर्म बनता है। संचित कर्मों में ऐसे कर्म जिसके अनुसार आत्मा को नवीन शरीर प्राप्त होता है, प्रारब्ध कर्म कहलाते हैं। जीव द्वारा इस जीवन में किये जा रहे कर्म को क्रियमाण कर्म कहते हैं। जो जीव की उत्पत्ति मानी जाए तो उसका नाश भी मानना पड़ेगा, क्योंकि उत्पत्ति और विनाश दोनों का ही कुछ कारण अवश्य होना चाहिए। बिना कारण के कार्य की उत्पत्ति नहीं हो सकती।

वैदिक धर्म पुनर्जन्म के सिद्धांत पर खड़ा है। स्वर्ग व नरक, शुभ और अशुभ कर्मों के फल हैं। वैदिक धर्म स्वर्गलोक–नरकलोक को स्थान विशेष न मानकर अवस्था विशेष मानता है। जब भविष्य का स्वर्ग–नरक रूप सुख–दुःख इस जन्म के कर्मों के फल हैं तो इस जन्म के सुख–दुःख किस जन्म के कर्मों के फल हैं? मानना पड़ेगा कि वे किन्हीं पूर्व–जन्म के कर्मों के फल हैं। इससे पुनर्जन्म, आवागमन सिद्ध होता है। वैदिक धर्म के अनुसार स्वर्ग अथवा नरक, विशेष स्थान नहीं, विशेष अवस्था का नाम है। जहां प्रकाश, आनंद तथा सुख हों, उस अवस्था को स्वर्ग कहा जाता है और जहां अंधकार, अहर्ष तथा दुःख हों, उस अवस्था को नरक कहा जाता है। मोक्ष सर्वोत्तम स्वर्ग है। मोक्षावस्था में आत्मा पाप–कर्म कर ही नहीं सकती, वह सान्त है।

मेरा मानना है कि कर्म वह फसल है, जिसे हर हाल में इंसान को काटना ही पड़ता है, इसलिए हमेशा अच्छे बीज बोयें ताकि फसल अच्छी हो। मंगलजनक कर्म करें जिससे शुभ फल व सुख प्राप्त हो।

यह अतिशयोक्ति नहीं कि सारे मानवीय मूल्य सत्कर्मों की हवा में पल्लवित, पुष्पित और विकसित होते हैं तथा जीवित रहते हैं। साथ ही मानव, परमेश्वर द्वारा सुख और दुःख दोनों के सहने के लिए बनाया गया है, किसी एक से मुँह मोड़ लेना कायरता है।

सर्व श्री दीप चन्द विजय कुमार,
कीरतपुर, जिला बिजनौर (उ.प्र.), मो. 9837444469

दीप कोल्ड स्टोर,
कीरतपुर, जिला बिजनौर (उ.प्र.), मो. 9457438575

दीप मार्बल्स,
कीरतपुर, जिला बिजनौर (उ.प्र.), मो. 9412468691

मूत्र–प्रणाली के रोग

–डॉ0 भगवान दास

1. प्रोस्टेट ग्रंथि में वृद्धि

प्रोस्टेट ग्रंथि पुरुषों के जनन उपकरण का एक अंग है। यह ग्रंथि मूत्राशय के समीप तथा इसके बाहरी भाग को घेरे हुए स्थित है। इसका मुख्य कार्य एक द्रव पदार्थ का स्राव करना है। यह द्रव पदार्थ शुक्र नामक तरल पदार्थ का ही एक अंश है। जब यह ग्रंथि धीरे–धीरे अनेक सालों के अन्दर बढ़ती है, तो इस स्थिति को प्रोस्टेट की सुदम्य वृद्धि अर्थात् आसानी से ठीक होने वाली वृद्धि जो कैंसर से रहित है, कहा जाता है। इस स्थिति में प्रायः पूरी ग्रंथि में ही वृद्धि हो जाती है। यदि वृद्धि संक्रमण या कैंसर के कारण हो, तो ग्रंथि का एक भाग भी आकार में बढ़ सकता है।

चुँकि यह ग्रंथि पुरुषों में जनन उपकरण का एक भाग है, अतः सामान्यतः 40–45 वर्ष की आयु वाले ज्यादातर सभी पुरुषों में इस ग्रंथि में वृद्धि आ जाती है। परंतु ज्यादातर सभी पुरुष इस थोड़ी–सी वृद्धि के कारण किसी प्रकार की कठिनाई का अनुभव नहीं करते और सामान्य रूप से जीवन बिताते रहते हैं। यह आयु में वृद्धि के साथ एक सामान्य प्रक्रिया मानी जाती है।

जब यह ग्रंथि सामान्य से अधिक रूप में बढ़ जाती है, तो इससे मूत्र की सामान्य क्रिया में गड़बड़ पैदा हो जाती है। यह बढ़ी हुई ग्रंथि मूत्राशय के बाहरी भाग पर दबाव डालती है, जिससे रोगी की मूत्र त्याग क्रिया में अचानक ही रुकावट आ जाती है अर्थात् रोगी मूत्र का त्याग नही ंकर पाता। प्रोस्टेट ग्रंथि में वृद्धि होने पर आमतौर पर जो लखण दिखाई देता है, वह है–दिन के समय पहले से अधिक बार मूत्र त्याग के लिए जाना और रात्रि के समय भी बहुत बार मूत्र त्याग करना। मूत्रत्याग के समय शुरु के मूत्र के वेग में, ऐसे रोगी को हिचकिचाहट महसूस होती है। उसके मूत्र के प्रवाह का आकार और वेग कम हो जाते हैं। पेशाब करते समय रोगी को जलन महसूस होती है। कभी–कभी तो मूत्र का वेग ही पूरी तरह बंद हो जाता है और रोगी मूत्र के साथ रक्त का त्याग करता है।

उपचार

प्रोस्टेट ग्रंथि की सुदम्य वृद्धि की चिकित्सा में शिलाजीत सबसे श्रेष्ठ औषधि मानी गई है। इसे 1/2 चम्मच की मात्रा में रात को सोते समय दूध के साथ देना चाहिए। इसके सेवन से शरीर के अंदर गर्मी हो जाती है। अतः सर्दी की ऋतु में तथा ठण्डे स्थानों में इसका सेवन आराम से किया जा सकता है। ऐसी स्थिति मे ंतो इसका प्रयोग दिन में दो या तीन बार तक कराया जा सकता है। परंतु गर्म स्थानों और ग्रीष्म ऋतु में इसका सेवन बिल्कुल थोड़ी मात्रा में ही कराना चाहिए। फिर भी इस औषधि को यदि दूध के साथ लिया जाए, तो शरीर पर पड़नेवाला इसका गर्म प्रभाव बहुत कम हो जाता है, इसके साथ–साथ इसके रसायन और वाजीकर प्रभाव बढ़ जाते हैं।

शिलाजीत से अनेक औषधीय योग तैयार किए जाते हैं। इनमें सबसे अधिक प्रचलित योग चंद्रप्रभा वटी है। इसकी गोलियां मिलती है। इन दो–दो गोलियों को दिन में तीन बार दूध के साथ सेवन कराना चाहिए। इस औषधि का प्रयोग रोगी को लम्बे समय तक करना पड़ता है, कम–से–कम लगातार एक वर्ष तक। यदि प्रोस्टेट ग्रंथि की वृद्धि से उत्पन्न लक्षण समाप्त भी हो जाएं, तो उसके बाद भी लगभग छः महीने इसका सेवन करते रहना चाहिए, जिससे ग्रंथि में वृद्धि का पुनः आक्रमण न हो सके।

आहार

इस रोगी के लिए खट्टे एवं तले हुए खाद्य–पदार्थ बहुत हानिकारक हैं। गाय का घी, मक्खन और दूध, लहसुन, अदरक एवं हींग रोगी के लिए बहुत उपयोगी हैं।

अन्य आचार–व्यवहार

प्रोस्टेट ग्रंथि की अधिक वृद्धि के लिए महत्वपूर्ण कारणों में एक कारण है–बहुत आधिक संभोग करना। जब इस ग्रंथि में वृद्धि आ जाए, तो इसके बाद संभोग नहीं करना चाहिए। मूत्र का वेग होने पर उसे रोकना हानिकारक है। अतः जैसे ही मूत्रत्याग की आवश्यकता अनुभव हो, रोगी को उसी समय मूत्रत्याग के लिए जाना चाहिए। इस रोग को बढ़ाने में कब्ज भी बहुत सहायक है। अतः रोगी को कब्ज से बचने का पूरा उपाय करना चाहिए। इसके लिए वह भोजन में ऐसे खाद्य–पदार्थ का सेवन कर सकता है, जो पेट साफ करने में सहायक हों, या उसे रेचक औषधि भी दी जा सकती है। इस ग्रंथि की वृद्धि होने पर रोगी के लिए आरामतलबी की आदतें भी नुकसान पहुंचाती हैं। भोजन लेने के एकदम बाद कुर्सी या बिस्तर पर बैठना ठीक नहीं हैं। प्रत्येक को भोजन के बाद लगभग 15 मिनट तक लेटकर आराम करना चाहिए। इस रोग की चिकित्सा और इससे बचाव दोनों के लिए प्रतिदिन तीन किलोमीटर तक की सैर बहुत लाभकारी सिद्ध हो सकती है।

2. पेशाब की जलन

कुछ लोग मूत्र–त्याग करते समय मूत्र मार्ग में जलन का अनुभव करते हैं। मूत्र–मार्ग में कुछ विशेष प्रकार के रोगों, जैसे–सुजाक, प्रोस्टेट ग्रंथि के बढ़ जाने से, मूत्राशय में पत्थरी होने से या सामान्य किंतु थोड़ा गाढ़ा मूत्र आने से(जैसा कि गर्मियों में होता है) इस प्रकार की समस्या हो जाती है। यह जलन पेशाब करते समय या करने के बाद भी हो सकती है। यह शिकायत दिन या रात में किसी समय भी हो सकती है। कुछ गिलास सादा पानी पीने से या क्षारयुक्त पेय पदार्थ लेने से यह शिकायत दूर हो सकती है। जलन के साथ–साथ मूत्र–मार्ग से पस आना, मूत्र का रुक जाना, मूत्र के साथ रक्त आना और बुखार आदि लक्षण भी पाये जा सकते हैं।

उपचार

जिस कारण से मूत्रमार्ग में जलन होती है, उस मुख्य बीमारी का उपचार बहुत सावधानीपूर्वक करना चाहिए। मूत्रमार्ग की जलन को दूर करने के लिए आयुर्वेद में कुछ खास औषधि–द्रव्यों का प्रयोग किया जाता है, जैसे–गोक्षुर(गोखरू), चंदन, उशीर (खस), शिलाजीत। इन द्रव्यों से तैयार किए गए अनेक औषधीय योग मिलते हैं। इनका सेवन ही प्रायः रोगियों को कराया जाता है। गोक्षुरादि गुग्गुलु और चंद्रप्रभा वटी इनमें बहुत लोकप्रिय हैं। इनकी दो–दो गोलियां, रोग की स्थिति के अनुसार दिन में तीन या चार बार रोगी को देनी चाहिए। ये औषधियां केवल जलन को ही दूर नहीं करती, अपितु जब मूत्र मार्ग से मूत्र द्वारा ये बाहर निकली हैं, तो एण्टीसेप्टिक प्रभाव डालती हैं। इनका प्रयोग रोग से बचाव के लिए तथा इलाज के रूप में, दोनों प्रकार से ही किया जाता है। इसके अतिरिक्त चंदनासव और उशीरासव नामक दो एल्कोहॉल युक्त औषधियों का प्रयोग भी इस रोग की चिकित्सा में किया जाता है। 6–6 चम्मच की मात्रा बराबर पानी मिलाकर दिन में दो बार भोजन के बाद इनका सेवन कराना चाहिए। इन औषधियों का भी जनन–मूत्र–प्रणाली पर एण्टीसेप्टिक प्रभाव पड़ता है।

पशु जगत से प्राप्त औषधि द्रव्यों में प्रवाल जलन को ठीक करने के लिए बहुत उपयोगी माना गया है। यदि रोगी को यह शिकायत बहुत समय से है, तो उसे प्रवाल का सेवन कराना चाहिए। इसे गुलाब जल के साथ घोटकर चूर्ण बनाया जाता है। 500 मि.ग्रा. की मात्रा में दिन में दो बार, दूध के

साथ मिलाकर उसका सेवन कराया जाता है।

आहार

रोगी को जहां तक हो सके, अधिक तात्रा में जल पीना चाहिए। नींबू का ताजा रस, नारियल का ताजा रस, संतरे का रस, गन्ने का रस और अनानास का रस इस रोग के लिए बहुत उपयोगी हैं। रोगी को सेब, अंगूर, आडू और आलूबुखारा आदि फल अधिक मात्रा मे देने चाहिए। गाजर और इसके पत्तों का रस एक औंस (30 मि.लि., 6–6 चम्मच) की मात्रा में दिन में दो बार देना चहिए। क्योंकि इस रोग में गाजर का रस बहुत लाभदायक होता है। चावल, घी और पत्ते वाली सब्जियां इस रोगी के लिए बहुत उपयोगी हैं। गर्म मसालों का सेवन तो रोगी को बिल्कुल नहीं करना चाहिए।

अन्य आचार–व्यवहार

गर्मियों के मौसम में पेशाब में जलन ज्यादातर लू लगने के कारण होती है। अतः बाहर धूप में जाने से पहले रोगी को कच्चे आमों को उबालकर तैयार किया गया चीनी वाला शर्बत एक या दो गिलास अवश्य पीना चाहिए। इस रोग के लिए जामुन का फल भी बहुत लाभप्रद है। गर्मी की ऋतु में प्रतिदिन प्रातःकाल रोगी को गुड़ मिलाकर दो या तीन गिलास पानी पीना चाहिए।

जलन वाले रोगी को गर्मी या धूप से बचकर रहना चाहिए। क्योंकि अधिक पसीना आने से शरीर में से काफी मात्रा में जल निकल जाता है। इससे मूत्र गाढ़ा हो जाता है। जब यह गाढ़ा मूत्र मूत्रमार्ग से निकलता है, तो उससे संक्षोभ उत्पन्न होता है और जलन होने लगती है।

आश्रम की गतिविधियां

1. **पिछले 72 वर्षों से प्रातः कालीन एवं सायं कालीन यज्ञ।**
2. **प्रतिवर्ष 5 दिवसीय ग्रीष्मोत्सव (मई माह) एवं शरदुत्सव (अक्टूबर माह)।**
3. **प्रतिवर्ष मार्च माह में चतुर्वेद पारायण यज्ञ अथवा गायत्री यज्ञ।**
4. **मई–जून माह में युवक एवं युवतियों के लिए बौद्धिक विकास शिविर।**
5. **प्राकृतिक चिकित्सा शिविरों का निरंतर आयोजन।**
6. **तपोवन विद्या निकेतन जूनियर हाई स्कूल का सफल संचालन।**
7. **साधु–सन्यासियों, वानप्रस्थियों तथा ब्रह्मचारियों के लिए निःशुल्क चिकित्सा।**
8. **गौवंश संवर्धन हेतु गौशाला का संचालन।**
9. **पिछले 34 वर्षों से पवमान मासिक पत्रिका का प्रकाशन।**
10. **निकट भविष्य में पूर्णकालिक प्राकृतिक चिकित्सा केन्द्र विकसित करने की योजना बनाई गई है जिसके लिए दो–दो कमरों वाली 6 कुटिया उपलब्ध हैं जिनका जीर्णोद्धार अपेक्षित है। इसके अतिरिक्त कुछ नवीन कक्षों का निर्माण भी करना आवश्यक होगा। यह निर्णय लिया गया है कि प्राकृतिक चिकित्सा केन्द्र के संचालन के लिए तपोवन सोसायटी (रजि.) के सहयोग एवं मार्गदर्शन के लिए संस्थापक सदस्य (पांच लाख रुपए दान देने वाले) तथा संरक्षक सदस्य (एक लाख रुपए दान देने वाले) बनाये जायेंगे। इन सभी सदस्यों के लिए प्राकृतिक चिकित्सा की निःशुल्क सुविधा उपलब्ध रहेगी।**

भ्रामक ही नहीं घातक भी हो सकती है किसी भी प्रकार की भविष्यवाणी

-सीताराम गुप्ता, दिल्ली

प्रायः अधिकांश व्यक्ति अपने भविष्य के विषय में जानने को बहुत अधिक उत्सुक रहते हैं। भविष्य के विषय में जानने की अनेक पद्धतियाँ भी हमने विकसित कर रखी हैं। लेकिन क्या वास्तव में भविष्य में घटित होने वाली घटनाओं के विषय में सही–सही बतलाया जा सकता है? संभवतः नहीं। यदि भविष्य के विषय में जानना संभव होता तो हम आने वाली बीमारियों के बारे में जानकर उनके आने से पहले ही उनका उपचार खोज लेते अथवा कर लेते। इससे हम न केवल अनेक दुर्घटनाओं से बच जाते अपितु अपराधों को रोकने में भी सफल हो जाते। साथ ही अपराधियों के विषय में जानकारी प्राप्त करके उन्हें उचित दंड देना भी संभव हो पाता। यदि हम विवेकपूर्वक विचार करें तो यही पाते हैं कि भविष्य में क्या होगा ये बतलाने की कोई विज्ञानसम्मत सटीक पद्धति अथवा विधि है ही नहीं। और यदि ये संभव है तो भी इससे लाभ नहीं हानियाँ ही होने की संभावना बढ़ जाती है।

किसी के बतलाए अनुसार घटित हो जाना एक संयोग मात्र है। इस संदर्भ में एक कहानी याद आ रही है। एक चरवाहा था। वह समझदार भी बहुत था। वर्तमान घटनाक्रम को ठीक से समझकर उसके परिणाम के बारे में पहले ही बता देता था। लोग उससे इतने अधिक प्रभावित थे कि वे उसे पक्का भविष्यवक्ता मानने लगे। उसके भविष्यज्ञान की चर्चा दूर–दूर तक फैल गई। बात राजा के कानों तक पहुँचने में भी देर नहीं लगी। राजा ने चरवाहे को तलब किया और उसकी परीक्षा लेने का मन बना लिया। राजा ने अपनी मुट्ठी में एक टिड्डा बंद कर लिया और चरवाहे से पूछा कि बता मेरी मुट्ठी में क्या है। ठीक–ठीक जवाब देगा तो इनाम पाएगा वरना मौत के घाट उतार दिया जाएगा। चरवाहा बेचारा कैसे बताए कि राजा की मुट्ठी में क्या है? किसी चीज़ को बिना देखे हम कैसे बता सकते हैं कि वो क्या है? चरवाहा डर के मारे थर–थर काँपने लगा।

संयोग से चरवाहे का नाम भी टिड्डा था। उसने घटनाक्रम को ठीक से समझकर अनुमान लगाया कि अब जान बचनी मुश्किल है और राजा से कहा, ''राजा तेरी मुट्ठी में बस टिड्डे की नन्ही सी जान है और कुछ नहीं।'' चरवाहे ने तो बस इतना ही कहा था कि राजा की मुट्ठी में टिड्डे नामक उस चरवाहे की नन्ही सी जान है लेकिन राजा ने समझा कि चरवाहे ने सही भविष्यवाणी की है और उसने उस चरवाहे को अपने राज्य का प्रमुख ज्योतिषी नियुक्त कर दिया। कई बार ऐसे संयोग सही होने के कारण ही लोग इन तथाकथित भविष्यवक्ताओं पर विश्वास करने लगते हैं और उनके चंगुल में फँस जाते हैं। एक उदाहरण से इस तथ्य को समझने का प्रयास करते हैं। कुछ लोग बच्चा पैदा होने से पहले ये बतलाने का कार्य करते हैं कि लड़का होगा या लड़की। साथ ही वे लड़का होने का उपाय भी बतलाते हैं। वैसे ये दोनों ही बातें कानून की दृष्टि से अपराध भी हैं।

इस तरह भविष्य बतलाना ग़ैरकानूनी भी है और ये सब करना और करवाना दंडनीय अपराध की श्रेणी में आते हैं लेकिन लोग कब मानते हैं? अब यदि वे सबके लड़का होने की भविष्यवाणी कर देते हैं तो भी उनकी लगभग पचास प्रतिशत

भविष्यवाणी तो ठीक ही बैठेगी क्योंकि ये स्वाभाविक है। अब जिन परिवारों में लड़का पैदा होगा वे उस भविष्यवक्ता पर अनायास ही विश्वास करने लगेंगे लेकिन इस प्रकार की घटनाओं अथवा संयोगों पर विश्वास करना अंधविश्वास के अतिरिक्त अन्य कुछ भी नहीं। ये बिलकुल वैसा ही है जैसे परीक्षा में बहुविकल्पात्मक प्रश्नों के उत्तर देने के लिए केवल पहले, दूसरे, तीसरे अथवा चौथे विकल्प पर निशान लगा देना। इस प्रकार के प्रयास में बिना जानकारी के अथवा बुद्धि का प्रयोग किए बिना भी काफी उत्तर ठीक हो जाते हैं और कई बार बहुत अच्छे अंक भी मिल जाते हैं। लेकिन क्या इसे सही ठहराया जा सकता है?

विवाह से पूर्व कुछ लोग लड़के और लड़की की जन्म कुंडलियों को मिलवा कर देखते हैं और अपेक्षित संख्या में दोनों के गुण मिल जाने पर ही विवाह के लिए तैयार होते हैं। लेकिन वास्तविकता ये है कि कई बार लड़के और लड़की के पर्याप्त गुण मिल जाने के उपरांत भी विवाह सफल नहीं हो पाते। अब इससे क्या सिद्ध होता है? यही न कि कुंडली–मिलान का कोई औचित्य नहीं। एक सज्जन का तो यहाँ तक कहना है कि यदि जन्म कुंडलियों का मिलान करने के बाद विवाह सफल नहीं होता है तो जन्म कुंडलियों का मिलान करने वाले व्यक्ति को दोषी मानकर उसे दंड दिया जाना चाहिए। बात बिलकुल पते की है लेकिन इस पद्धति की कमियाँ छिपाने के लिए कोई न कोई दूसरा बहाना ढूँढ़ लिया जाता है। गलत बात को सही और सही बात को गलत सिद्ध करने के लिए हमारे पास कुतर्कों की कमी नहीं होती।

वास्तविकता ये है कि कई बार जन्म कुंडलियों का सही मिलान करने के चक्कर में लोग अच्छे रिश्तों को नज़रअंदाज़ कर देते हैं और गलत जगह फँस जाते हैं जिसके बड़े भयंकर परिणाम होते हैं। भविष्य बतलाना केवल लोगों को बरगलाना व बेवकूफ बनाने का उपक्रम है और इसके परिणाम भी बहुत नुकसानदायक होते हैं। कोई विद्यार्थी पास होगा या फेल होगा ये कैसे बतलाया जा सकता है? यदि वह परिश्रम करेगा तो अवश्य पास होगा और यदि परिश्रम नहीं करेगा तो उसके पास होने की संभावना भी कम हो जाएगी। लेकिन यदि कोई भविष्यवक्ता इस प्रकार की पास या फेल होने की भविष्यवाणी करता है तो इसके दुष्परिणाम भी कम नहीं होते। यदि किसी अच्छे विद्यार्थी के विषय में भविष्यवाणी कर दी जाए कि वो पास होगा या प्रथम स्थान प्राप्त करेगा तो संभव है कि इस भविष्यवाणी के पश्चात वो विद्यार्थी परिश्रम करना ही छोड़ दे अथवा कम परिश्रम करे और पास होने पर भी अच्छे अंक प्राप्त न कर सके।

इसके विपरीत परिस्थितियों में भी कुछ ऐसा ही होने की संभावना बढ़ जाएगी इसमें संदेह नहीं। यदि किसी कमज़ोर विद्यार्थी के विषय में भविष्यवाणी कर दी जाए कि वो पास नहीं होगा तो इससे वो पूरी तरह से निराश हो जाएगा और वो पहले जितना परिश्रम करता था उतना परिश्रम करना भी छोड़ देगा और सचमुच फेल हो जाएगा जबकि वास्तविकता ये है कि परिश्रम करने के लिए प्रोत्साहित करके ऐसे विद्यार्थियों को भी सफलता के मार्ग पर अग्रसर किया जा सकता है। कई व्यक्ति इन भविष्यवक्ताओं के चक्कर में पड़कर सही निर्णय लेने की क्षमता ही खो बैठते हैं। कई लोग इन तथाकथित भविष्यवक्ताओं से पूछे बिना कोई काम नहीं करते और उनके चक्कर में पड़कर काम करना ही छोड़ देते हैं और इस तरह से कई बार अच्छे अवसर भी उनके हाथ से निकल जाते हैं। इस प्रकार से स्पष्ट हो जाता है कि भविष्य के विषय में बतलाना न केवल एक कपोलकल्पित विद्या है अपितु इसका दुष्प्रभाव भी कम नहीं पड़ता।

वैदिक साधन आश्रम तपोवन

नालापानी देहरादून उत्तराखण्ड़–248008

दूरभाष–0135–2787001

आत्मकल्याण का स्वर्णिम अवसर

सत्यार्थ प्रकाश स्वाध्याय शिविर

तद्नुसार दिनांक 1 अगस्त से 15 अगस्त, 2022

समय: प्रात: 10.30 से 12.30 तक

प्रशिक्षक : श्री महेन्द्र मुनि जी

निवास स्थान: शाखा-2, कुटि नं. 31,
आर्य वानप्रस्थ आश्रम, ज्वालापुर, हरिद्वार।
फोन: 8178743038

संस्कृत पठन–पाठन शिविर

तद्नुसार दिनांक 16 अगस्त से 31 अगस्त, 2022

समय: प्रात: 10.30 से 12.30 तक

प्रशिक्षक : लोकभाषा प्रचार समिति

मान्यवर महोदय,

सादर नमस्ते!

आपको यह जानकर हर्ष होगा कि अनेक आर्य भाई-बहनों के अनुरोध पर दिनांक 1 अगस्त से 15 अगस्त 2022 तक सत्यार्थ प्रकाश का विस्तारपूर्वक स्वाध्याय कराने के लिए आर्य समाज के मूर्धन्य विद्वान श्री महेन्द्र मुनि जी ने अपनी स्वीकृति प्रदान कर दी है। इसी के तारतम्य 16 अगस्त से 31 अगस्त 2022 तक लोकभाषा प्रचार समिति के सौजन्य से संस्कृत भाषा के पठन-पाठन एवं वार्ता का आयोजन किया गया है।

नियम:

1. 18 वर्ष से 80 वर्ष आयु के बालक-बालिकाएं एवं अन्य स्त्री/पुरुष शिविर में भाग ले सकते हैं।
2. इच्छुक व्यक्ति दिनांक 25 जुलाई 2022 तक सत्यार्थ प्रकाश स्वाध्याय शिविर हेतु 500 रुपए जमा करके आश्रम कार्यालय में श्री चन्दन सिंह, मो. 7895978734 से सम्पर्क कर के रजिस्ट्रेशन करा सकते हैं। इसी प्रकार संस्कृत के पठन-पाठन हेतु दिनांक 12 अगस्त 2022 तक 500 रुपए जमा कराकर रजिस्ट्रेशन करा सकते हैं। सभी व्यक्ति सत्यार्थ प्रकाश की प्रति एवं डायरी, पैन आदि साथ रखें।
3. बाहर से आने वाले व्यक्तियों के लिए आवास एवं भोजन की व्यवस्था आश्रम द्वारा की जायेगी। आवास एवं भोजन के मद में प्रति व्यक्ति 300 रुपए प्रति दिन देय होगा। देहरादून एवं आस-पास के व्यक्ति अपने आवास से आकर कक्षाओं में भाग ले सकते हैं।

निवेदक

विजय कुमार आर्य	प्रेम प्रकाश शर्मा	अशोक कुमार वर्मा
अध्यक्ष	सचिव	कोषाध्यक्ष
09837444469	09412051586	09412058879

BASANTA MAL SAT PRAKASH

Manufactures of : All Kinds Shawls & Lohies

M : 094171-36756, 70877-54848

GHASS MANDI, LUDHIANA

हमारे पास बेबी सॉफ्ट शॉल, पूजा शॉल, स्टॉल शॉल, मिक्सचर लोई, जैकेट शॉल, कढ़ाई शॉल, कैशमीलोन प्लेन क्लॉथ, चैक शर्टिंग क्लॉथ में हर प्रकार की वैरायटी बनती है और रेट भी कम हैं। कृपया एक बार जरूर सम्पर्क करें।

ARYA TEXTILE

Manufactures of :
All Kinds Handloom Bed Sheets & Furnishing Fabrics

M : 98963-19774, 95412-88174, 98964-01919

Specialist in : BABY BLANKETS & READYMADE CURTAINS

हम Readymade Curtains, Jachets, Guddad, Loi, Mat, Baby Soft Shawls, Baby Blankets, Acrylic Blankete, Rajai Khol (Dohar), Rajai, comforter, AC Set, Velvet Joda & 3D Bed Sheets, Dhari etc. आदि के निर्माता हैं। इसके अलावा मिंक व पोलर कम्बल (Mink & Polar) आदि भी बेचते हैं और रेट भी कम हैं। कृपया एक बार जरूर सम्पर्क करें।

Factory :
Opp. RK School,
Kutani Road, Panipat-132103

PREMIUM QUALITY

Shop :
665/4, Pachranga Bazar,
Panipat-132103

Baby Blankets / Mink Blankets / Quilts / Comforters / Jackets / Duvet Covers / Shawls / Fleece Blankets

MUNJAL SHOWA

हाई क्वालिटी शॉकर्स

TPM Certified

ISO / TS - 16949 - 2002 Certified

ISO - 14001 Certified

OHSAS - 18001 Certified

मुंजाल शोवा लिमिटेड भारत की प्रमुख शॉक एब्जॉर्बर्स बनाने वाली कंपनी है जिसकी रेंज फ्रन्ट फोर्कस, स्ट्रट्स (गैस चार्जड और कन्वेन्शनल) और गैस स्प्रिंगस की टू व्हीलर/फोर व्हीलर उद्योगों को उपलब्ध कराती है। कंपनी गुणवत्ता और सुरक्षा के उच्चतम मानकों के अनुरूप अपने सभी उत्पादों का निर्माण करती है। कंपनी के उत्पाद आरामदायक और सुरक्षित सवारी देते हैं और ये टिकाऊ और विश्वसनीय भी हैं। मुंजाल शोवा लिमिटेड, QS 9000, TS–16949, ISO 14001, OHSAS 18001 और TPM प्रमाणित कंपनी है। मुंजाल शोवा के तीन मैन्युफैक्चरिंग प्लॉट हैं – गुड़गाँव, मानेसर (हरियाणा) और हरिद्वार (उत्तराखण्ड)। मुंजाल शोवा लिमिटेड का शोवा कार्पोरेशन जापान के साथ तकनीकी और वित्तीय सहयोग करार है ।

हमारे उत्पाद

- स्ट्रट्स/गैस स्ट्रट्स
- शॉक एब्जॉर्बर्स
- फ्रन्ट फोर्कस
- गैस स्प्रिंगस/विन्डो बैलेन्सर्स

हमारे ख्यातिप्राप्त ग्राहक

Hero HONDA HONDA MARUTI SUZUKI YAMAHA

मुंजाल शोवा लिमिटेड

प्लॉट नं. 9–11, मारुति इंडस्ट्रियल एरिया
गुड़गाँव–122015, हरियाणा
दूरभाष :
0124–2341001, 4783000, 4783100
ईमेल : msladmin@munjalshowa.net
वेबसाइट : www.munjalshowa.net

MUNJAL SHOWA

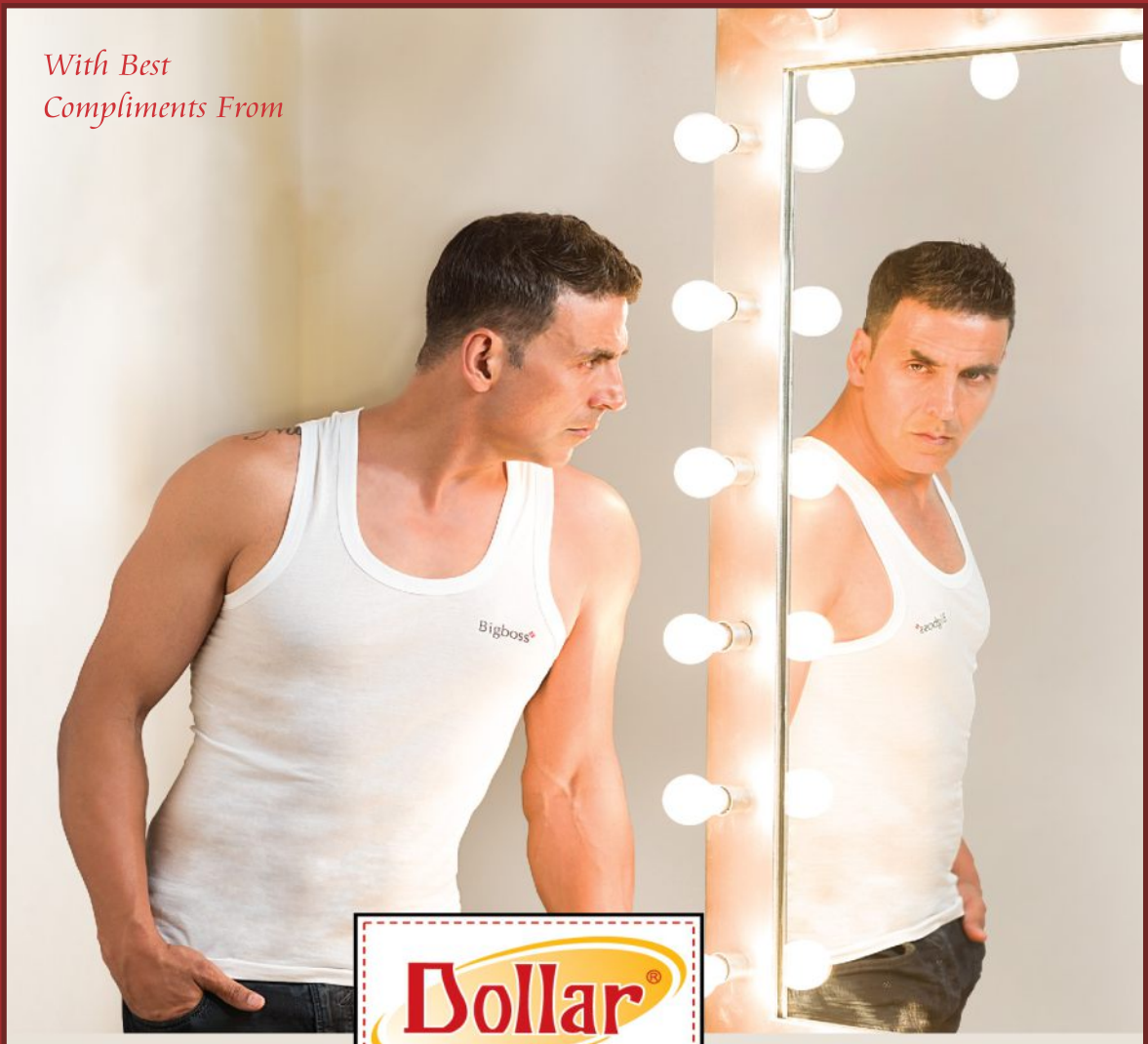

सरस्वती प्रेस, देहरादून, ई-मेल : akhilg333@gmail.com

वैदिक साधन आश्रम सोसाइटी के लिए प्रकाशक मुद्रक प्रेम प्रकाश द्वारा सरस्वती प्रेस, 2, ग्रीन पार्क, निरंजनपुर, देहरादून–248001 (उत्तराखण्ड) से मुद्रित एवं वैदिक साधन आश्रम सोसाइटी (रजि.), नालापानी, देहरादून (उत्तराखण्ड) से प्रकाशित।

संपादक– कृष्णकान्त वैदिक शास्त्री